# सर्वोपरि भगवान
## श्री स्वामिनारायण तथा विश्वधर्म

लेखन - संकलन : अ. मु. प. पू. श्री नारायणभाई गी. ठक्कर

सर्वजीवहितावह ग्रंथमाला - ६६

संस्थापक : अ.मु.प.पू. श्री नारायणभाई गी. ठक्कर
श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन
अमदावाद - १३

## श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन का प्रतीक

प्रतीक में श्री स्वामिनारायण भगवान के चरण कमल में सामुद्रिक शास्त्र में वर्णन किये गये भगवत्स्वरूप के सोलह विलक्षण चिन्ह हैं:

### *दाहिने चरण कमल में नौ चिन्हः

**स्वस्तिक** मांगल्यमय भगवत्स्वरूप को सूचित करता है।

**अष्टकोण** उत्तर-दक्षिण-पूरव-पश्चिम-अग्नि-ईशान-नैऋत्य-वायव्य आठों दिशा में भगवत्-करूणा वह रही है, इसका प्रतीक है।

**ऊर्ध्वरेखा** भगवत्कृपा से जीवों का अविरत ऊर्ध्वीकरण दर्शित करता है।

**अंकुश** सर्व को अंकुश में रखने, सर्व के कारण रूप ऐश्वर्य का प्रतीक है तथा अंतःशत्रु को वस में रखना सूचित करता है।

**ध्वज** ध्वज अथवा केतु सत्यस्वरूप भगवान की विजय पताका है ।

**वज्र** भगवत्स्वरूप का वज्र तुल्य शक्तिशाली बल जीवों के दोषों को नष्ट कर काल-कर्म-माया के भय से मुक्त करता है, यह निर्देश देता है।

**पद्म** जलकमलवत् निर्लेप करने वाले भगवत्स्वरूप की करूणामय मृदुता को सूचित करता है।

**जांबुफल** भगवत्स्वरूप में जो सम्मिलित हैं उनको प्राप्त दिव्य सुखरूप रस का प्रतीक है।

**जव** अग्नि में जव, तल आदि अनाज़ की आहुति देकर अहिंसामय यज्ञ करने वाले एवं भगवत्स्वरूप में सम्मिलित है उनके धन-धान्य एवं योगक्षेम का भगवान स्वयं वहन करते है, यह सूचित करना है।

***बाये चरण कमल में सात चिन्हः**

**मीन** विपरित प्रवाह में बहकर उद्‌भव स्थान तक पहुँचती मीन की सदृश ऐश्वर्य-सुख के उद्‌भव स्थान भगवत्स्वरूप की प्राप्ति सूचित करता है।

**त्रिकोण** जीव को मनोव्यथा, व्याधि, आपत्ति से मुक्त करवा कर ईश्वर, माया, ब्रह्म की त्रिपुटी से पर परब्रह्म-स्वरूप में स्थित करने का निर्देशक है।

**धनुष** अधर्म से निज आश्रित का रक्षण करने का प्रतीक है।

**गोपद** भगवत्प्रिय गोवंश और भगवत्प्रिय सत्पुरूषों के परोपकारी लक्षण को सूचित करता है।

**व्योम** भगवत्स्वरूप के आकाशवत् निर्लेप भाव की सर्वत्र व्यापकता सूचित करता है।

**अर्धचन्द्र** भगवत्स्वरूप के घ्यान के द्वारा चँद्रकला की सदृश वृद्धि होकर पूर्णता को प्राप्त करता है, यह दर्शित करता है।

**कलश** भगवत्स्वरूप की सर्वोपरिता एवं परिपूर्णता का प्रतीक है।

प्रतीक में स्थित भगवत्स्वरूप के चिन्ह के रहस्य को दृष्टि समक्ष रखकर, सर्व जीव का हित हो ऐसी निःस्वार्थ ज्ञान-ध्यान-सेवा प्रवृत्ति सदैव करते-करवाते रहने के मिशन के पुरूषार्थ में भगवत्कृपा बरसती रहे, ऐसी श्री हरि के चरण कमल में प्रार्थना।

।। श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।।

# सर्वोपरि
# भगवान श्री स्वामिनारायण
## — तथा —
# विश्वधर्म

सर्वजीवहितावह ग्रंथमाला

६६

: संस्थापक :

• अ. मु. प. पू. श्री नारायणभाई गी. ठक्कर •

श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन
अहमदाबाद-१३

**श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन**

**सर्वजीवहितावह ग्रंथमाला**

❄ **प्रकाशन समिति** ❄

*: प्रेरक - मार्गदर्शक :*

❄ **अ. मु. प. पू. श्री नारायणभाई गी. ठक्कर** ❄

©श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन, अहमदाबाद

(रजि. नं. ई/४५४६/अहमदाबाद : १९८१)

इन्कमटेक्स एक्षेम्पशन u/s 80(G)5

***प्रथम संस्करण***

प्रतियाँ : १०००

२००७, १६, फरवरी

सं. २०६३, महा वद चौदश

***सेवा मूल्य*** : रु.१०/-

***प्रकाशक***

श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन

८, सर्वमंगल सोसायटी, पूज्यश्री नारायणभाई मार्ग

नारणपूरा, अहमदाबाद - ३८००१३ ✆ : २७६८२१२०

*मुद्रक*

भगवती ओफसेट

बारडोलपूरा, अहमदाबाद

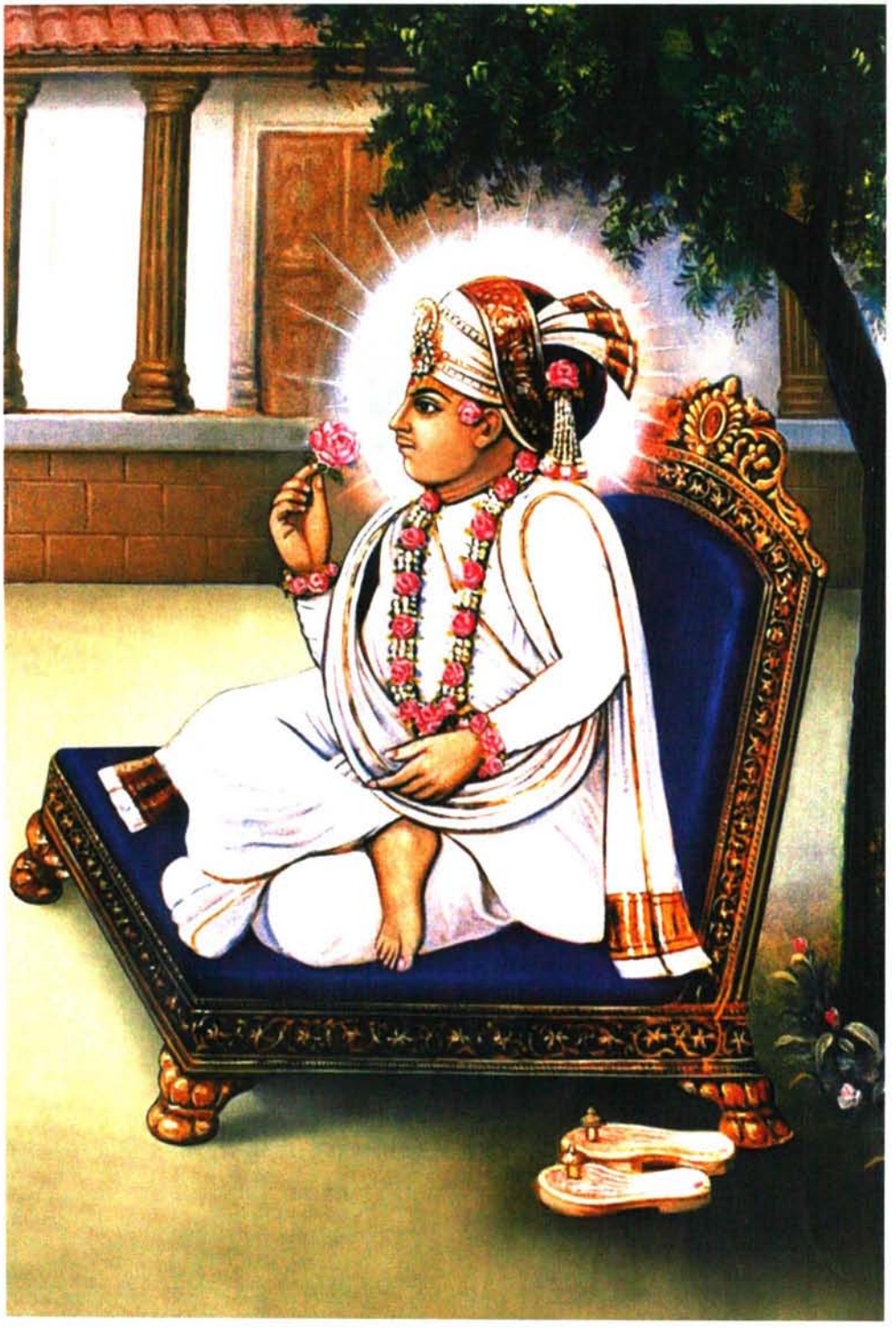

सर्वोपरि उपास्य मूर्ति

पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान

# अर्पण

अनंतकोटि मुक्त के
स्वामी एवं सदा साकार
दिव्य मूर्ति ऐसे परम कृपालु
**श्री स्वामिनारायण भगवान** के
गूढ़ रहस्य ज्ञान को समझाने वाले,
महाप्रभु के सुखनिधि स्वरूप की सर्वोपरिता
सर्वत्र प्रवर्तित करने वाले तथा अनादिमुक्त की
सर्वोत्तम स्थिति का अनुभव करवाने वाले
-इस प्रकार समग्र सत्संग और मानव कुल
पर महद् उपकार करने वाले परम कृपालु
**अनादि महामुक्तराज़**
**प. पू. श्री अबजीबापाश्री** के
चरणकमलों में सादर समर्पित

●

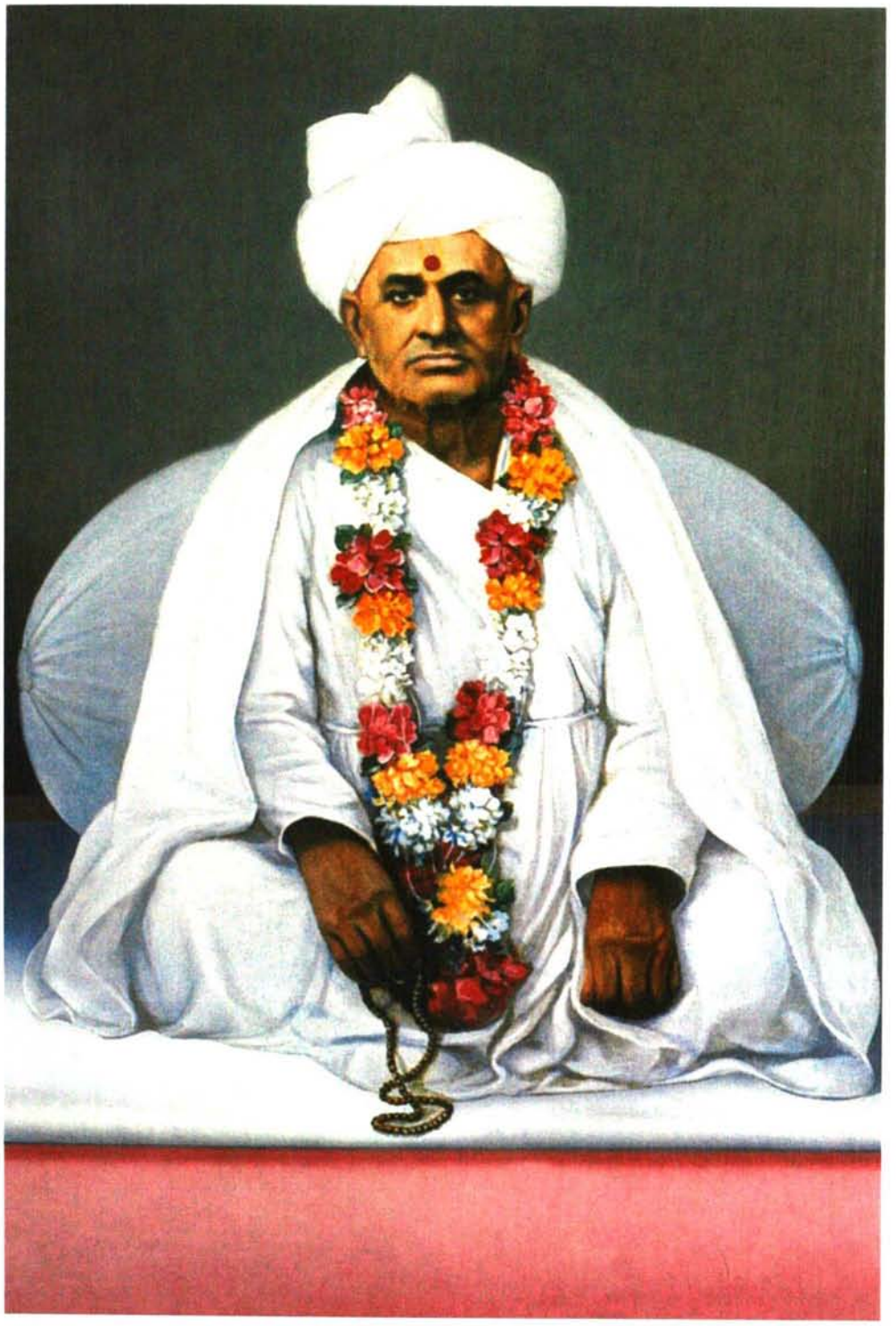

रहस्यज्ञान प्रदाता

अनादि महामुक्तराज श्री अबजीबापा

# अर्घ्य

श्रीजीमहाराज़ तथा बापाश्री के
सर्वोपरि तत्वज्ञान को वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत
कर आध्यात्मिक, सामाजिक तथा शिक्षा क्षेत्र में
अद्वितिय योगदान देने वाले, धर्मशुद्धि, संचालनशुद्धि एवं
चारित्र्यशुद्धि प्रखर हिमायती तथा चैतन्य का ऊर्ध्वीकरण
करने रूपी ब्रह्मयज्ञ की आहलेक जगाने सर्वजीवहितावह
संस्था **श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन** की
स्थापना करने वाले करूणा मूर्ति सद्गुरूवर्य
**अनादि मुक्तराज़ पूज्य श्री नारायणभाई** के
चरण कमल में शतकोटि वंदन

## संस्थापक

अनादि मुक्तराज

पूज्यश्री नारायणभाई गीगाभाई ठक्कर

# संपादकीय विशेष

श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन ऐसी ग्रंथ श्रेणी प्रकाशित-संपादित करने को उत्सुक है, जो समग्र मानव जाति के लिये कल्याणकारी हो एवं जिसके पठन से भारतीय संस्कृति का उच्चत्तम उद्देश्य सार्थक होता हो।

वर्तमान बुद्धियुग में उच्च शिक्षा का विस्तार प्रतिदिन बढ़ रहा है। उच्च शिक्षा मूल उद्देश्य जीवन में उच्चतर मूल्य प्रस्थापित करना है, जीवन का सर्वोच्च मूल्य परमात्मा के परम सुख की अनुभूति में स्थित है। इन उद्देश्यों की ओर पथदर्शित करने में यह ग्रंथ श्रेणी सहायक होगी ऐसी अपेक्षा है।

शिक्षा, विज्ञान एवं यंत्रविद्या के अविरत बढ़ते हुए व्याप को हमें इस प्रकार ढ़ालना है कि केवल भौतिक सुख की प्राप्ति का साधन न बनकर, मानव के आंतरिक विकास में उच्चत्तम सहायक हो; साथ ही हमें ऐसी समझ का प्रसार करना है कि उत्क्रांति का अंतिम लक्ष्य उत्तरोत्तर विकसित होकर परमात्मा के दिव्य सुख में सम्मिलित होने में है।

दिव्यानंद की प्राप्ति के लिये अविरत विकसित होने की प्राकृतिक अंतःप्रेरणा मानव को ईश्वर द्वारा दिया गया अनमोल उपहार है। यह ऐसा सूचित करता है कि हम सब साथ मिलकर ऐसी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिस्थिति का निर्माण करें, जिससे जीवन के उर्ध्वीकरण की प्रक्रिया निर्बाध रूप से पूर्णतः पल्लवित हो। इस कार्य को गति प्राप्त हो ऐसे प्रेरणादायी साहित्य का सर्जन करना आवश्यक है।

मानव जाति के आध्यात्मिक एवं सामाजिक श्रेय के हेतु श्री स्वामिनारायण भगवान ने, जीवन को अविरत ऊर्ध्व बनाकर, आत्यंतिक दिव्य सुख की प्राप्ति हो ऐसा

समन्वयकारी ज्ञानमार्ग प्रस्थापित किया है; उनकी श्रीमुखवाणी वचनामृत तथा शिक्षापत्री में इस तत्त्व ज्ञान की गहनता अनन्य है एवं सविस्तार सरल भाषा में प्रस्तुत है। इसके अतिरिक्त स्वयं के ब्रह्मनिष्ठ संत एवं गृहस्थ मुक्तपुरूष द्वारा सर्वहितावह साहित्य भी विपुल मात्रा में सज्जित करवाया है।

उपर्युक्त ग्रंथो में सर्वग्राह्य भारतीय संस्कृति तथा जीवन जीने की वास्तविक दिशा दर्शित की गई है। अतः इस ग्रंथ श्रेणी में सर्वजन पूरब के हो या पश्चिम के, सभी को दिव्यता की ओर अग्रसर होने में पथदर्शक हो, ऐसे आदर्श तथा ज्ञान को अर्वाचीन ज्ञान के प्रकाश में प्रस्तुत करने का उत्तम प्रयत्न किया जायेगा। हमें विश्वास है कि इससे मानव जीवन में संवादिता आयेगी एवं आधुनिक जीवन की विषमता क्रमशः कम होते हुए दूर हो जायेगी।

भारत या विश्व के अन्य साहित्य जिसमें दर्शित विचार हमारे उद्देश्य के साथ सुसंगत होंगे, उन्हे भी इस ग्रंथ श्रेणी में सम्मिलित किया जायेगा।

हमारी ईच्छा यह है कि इस ग्रंथ श्रेणी के पुस्तक केवल गुजराती भाषा में ही नहीं, अपितु हिंदी, अंग्रेजी आदि भाषा में भी प्रकाशित करें, जिससे अन्य भाषी पाठक भी इस ग्रंथ श्रेणी से लाभांवित हो।

मिशन की इस प्रवृत्ति की सफलता प्राप्ति में सभी का सहकार प्राप्त हो एवं मिशन के सर्व कार्य में सदैव प्रभु कृपा संलग्न हो, यही अभ्यर्थना।

दासानुदास

**नारायणभाई गी. ठक्कर**

स्थापक प्रमुख

श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन

सं. २०४२, श्रीहरि जयंती

अप्रैल १८, १९८६

अहमदाबाद

# आमुख

भगवान श्री स्वामिनारायण की अनंत दिव्य लीला एवं सर्वजीवहितावह सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्रवृत्तियाँ हमें उच्च प्रकार की मानवता, सेवा, समाजसुधार तथा प्रेमभक्ति के गुणों का सिंचन करनेवाली तथा नास्तिकता के गाढ तिमिर को भेद परब्रह्म परमात्मा के प्रकाश को प्राप्त कराए ऐसी चमत्कारी एवं समर्थ हैं। उसका अविरत मनन-चिंतन हमारा पूर्णरूप से परिवर्तन कर हमें संस्कारी, सदाचारी तथा वास्तविकरूप से सत्संगी बनाएगा यह निर्विवाद है। इस उद्देश्य को लक्ष्य में रख, अ. मु. नारायणभाई ठक्कर ने यह पुस्तिका तैयार की है।

अंधश्रद्धा, कुरितियाँ, प्रलोभन, वहम एवं धर्म में प्रवेशित गलतफहमी से समाज का वातावरण जब दूषित तथा कलुषित हो रहा था, तब क्रांतिकारी अवतारी महाप्रभु श्री स्वामिनारायण ने मनुष्य स्वरूप में प्रकट हो, जीवों को अज्ञानरूपी अंधकार से बाहर निकाल प्रकाश में लाए। मनुष्यों में भले-बुरे तथा सही-गलत के विवेक को समझने की दृष्टि पैदा की। यह कार्य उन्होंने अनेक लोगों के जीवन के साथ एकरूप होकर किया। लोगों ने

सदाचार को समझा; धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति के मूल्यों को समझा तथा अपने वर्तन में सम्मिलीतकर सच्चे मानव बने।

वर्तमान समय में श्री स्वामिनारायण महाप्रभु के समन्वयकारी, सर्वमान्य धर्म की स्वच्छ तथा उन्नत नीतिरीति की पावनकारी ज्योत विश्वभर में प्रकाशित हो रही है। सर्वत्र स्वामिनारायण भगवान का दिव्य संदेश मानवजाती की आत्मा को झँझोडकर जाग्रत कर रहा है।

भगवान श्री स्वामिनारायण के जीवन-कथन का तात्विकरूप से अध्ययन करना यह आध्यात्मिक पिपासु प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक तथा अनिवार्य है। प्रत्येक व्यक्ति ऐसा करने को प्रेरित हो अतः संक्षिप्त में स्वामिनारायण भगवान के जीवन के भिन्न-भिन्न सामाजिक तथा आध्यात्मिक पहलूओं को उजागरकर उनके अवतारी कार्य को अनेकविध दृष्टि से इस पुस्तिका में प्रस्तुत किया है। यह पुस्तिका इस दिशा में सर्व को उपयोगी तथा फलदायी हो ऐसी महाप्रभु को प्रार्थना।

सं. २०६३, महा वद चौदश — प्रकाशन समिति
ई. स. २००७, १६ फरवरी — श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन
अमदावाद

# सर्वोपरि भगवान
# श्री स्वामिनारायण
# तथा
# विश्वधर्म

# सर्वोपरि
# भगवान श्री स्वामिनारायण
# तथा
# विश्वधर्म

*पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान के अवतारी कार्य का मूल्यांकन करने के प्रयास को महासागर की तह से मोती निकालने के प्रयास के साथ तुलित किया जा सकता है। परब्रह्म परमात्मा का कोई क्या मूल्यांकन करे? उनकी क्या पहचान करवाये? वे स्वयं ही प्रकट होकर खुद की पहचान करवाते हैं।*

*भगवान श्री स्वामिनारायण परात्पर परब्रह्म परमात्मा हैं, इसका सबूत तो केवल स्वानुभव है। यह बुद्धि से नहीं, परंतु अनुभव के द्वारा ही ज्ञात हो ऐसा है; तथापि सर्वहितार्थ समकालीन समर्थ चिंतक, महापुरुषों के अभिप्राय, संतो एवं मुमुक्षुजनों को प्राप्त हुए प्रत्यक्ष अनुभव तथा शास्त्रों के आधारवचनों से उसका समर्थन करने का हम नम्र प्रयास करें; वैसे तो भगवान के चरित्रों में से यथार्थ सार तो उनके विशिष्ठ आवश्यकतावाले ही समझते हैं।*

*मान लें, श्री स्वामिनारायण को पलभर के लिए भगवान के तौर पर आरोपित ना भी करें फिर भी*

उनके चरित्रों का यदि निरीक्षण किया जाए तो उस पर से हमें प्रतीत होगा कि वे मनुष्य के जीवन को विशेष उन्नत तथा उपकारक बनाए ऐसा है।

## श्री स्वामिनारायण का प्रादुर्भाव

यदा-यदा धर्म की ग्लानि होती है, तदा-तदा हरेक युग में परमात्मा अधर्म के विनाशार्थ एवं धर्म की स्थापना के लिये अवतार धारण करते हैं। श्री स्वामिनारायण के प्रादुर्भाव के पूर्व लंबे अर्से से धर्म का लोप होते आया था। देशभर में अंधाधूंध, अराजकता, डकैती, लूटमार, खून-खराबा आदि होते थे। तामस यज्ञों का आयोजन किया जाता था। कुंडापंथ, कौल, शाक्त, वाममार्ग, शुष्कवेदांत प्रचलित थे। आसुरी संपत्ति को पोषण मिले ऐसा आचरण चारों तरफ दृष्टिगोचर होता था। वैष्णव संप्रदाय कुछ अंश तक शिथिलता ग्रस्त था।

एसे विषमकाल में संवत १८३७ के चैत माह की शुकल पक्ष की नवमी, ता. २-४-१७८१ के दिन भगवान श्री स्वामिनारायण ने अयोध्या के समीप आए ग्राम छपैयापुर में श्री धर्मदेव तथा भक्तिमाता के यहाँ अवतार धारण किया। उनके पिता का मूल नाम तो हरिप्रसाद था, परंतु उनमें धर्म के गुण विशेष होने से वे 'धर्मदेव' के नाम से प्रख्यात हुए। उनकी माता का नाम प्रेमवती था। उनमें प्रधानतः भक्ति के गुण होने से सब उन्हें 'भक्तिमाता' के नाम से संबोधित करते थे।

श्री स्वामिनारायण के प्राकट्य के पूर्व अनेक मुक्त पुरुष अवतरित हो चूके थे, जिन्होंने बाद में श्री स्वामिनारायण के आश्रित हो, उनके सामाजिक तथा धार्मिक क्रांति के कार्य में बहुत बडा योगदान दिया था। सूर्योदय होते ही जिस प्रकार दिशाएँ प्रकाशित होने लगती हैं, उस प्रकार प्रभु के प्राकट्य से उन सभी में अलौकिक आभा उदित हो गई; किसी को दिव्य स्वरूप के दर्शन होने लगे; कई लोगों की संसार की वासना टूट गई, वैराग्यवृत्ति उत्पन्न हुई; सामान्य जनों में मुमुक्षुता जाग्रत होने लगी। प्रभु के प्रादुर्भाव की ऐसी विलक्षणता प्रतीत होने लगी।

श्री स्वामिनारायण का अवतारी प्राकट्य महान संक्रांति के समय ही हुआ। इसु ख्रिस्त की इस अठारवी सदी में अन्य महान व्यक्ति भी प्रकट हुए। गुजरात, कच्छ तथा काठियावाड में धीरो, भोजो, रणछोड, लालो आदि भक्त इस समय थे। दयाराम कवि तथा राजाराममोहनरोय जैसे कवि तथा समर्थ चिंतक भी इस समय में हुए। यह वही सदी थी जिसमें हिंदभर में बडी से बडी सामाजिक, धार्मिक एवं राजकीय क्रांति के इतिहास का सर्जन हुआ। इस क्रांति के इतिहास सर्जन में श्री स्वामिनारायण का योगदान सब से अधिक था।

## बाल्यकाल

श्री स्वामिनारायण का बचपन का नाम घनश्याम

था। आठ वर्ष की उम्र में यज्ञोपवित संस्कार ग्रहणकर पिता के पास से अल्पकाल में निज की अलौकिक बुद्धि द्वारा उन्होंने वेद, वेदांत आदि का ज्ञान प्राप्त कर लिया। इस अर्से में एकबार बाल घनश्याम अपने पिता धर्मदेव के साथ अद्वैतवादी विद्वानो की सभा में हिस्सा लेने काशी गए। यहाँ अद्वैतवादी पंडितों का बाल घनश्याम ने पराजय किया। बाल घनश्याम की विद्वता देख पंडित दिग्मूढ हो गए। एक नन्हें बालक में इतनी शक्ति! नितांत आश्चर्य!!

उनके बाल्यकाल का एक और प्रसंग हम देखें। घनश्याम आठदस वर्ष के थे, तब एक बार छपैया ग्राम में एक मछुआरे ने मीनसरोवर से मछलियों को पकडकर किनारे पर रखी। घनश्याम ने उसे दृष्टिमात्र से सजीवकर पुनः जल में डाल दिया; तथा मछुआरे को अहिंसा धर्म समजाते हुए कहा : 'जिस प्रकार तुम्हें जीने का अधिकार है उसी प्रकार इन जीवों को भी है।' नन्हें बालक का यह ऐश्वर्य देख मछुआरे ने अपना धंधा ही छोड दिया।

बाल्यकाल में ऐसी अद्‌भुत एवं चमत्कारी शक्ति का दर्शन किसी व्यक्तिविशेष पुरुष के जीवन में ही दृष्टिकृत होता है।

अब घनश्याम ११ वर्ष के हुए। ६ माह में ही उनके माता एवं पिता उभय अक्षरधामनिवासी हुए। तत्पश्चात् एक दिन घटना घटित हुई, कुस्ती लडने समय घनश्याम ने एक लडके को फेंक दिया। इस

घटना से उनके बडेभैया को फरियाद मिली। बडेभैया रामप्रतापजी ने घनश्याम पर स्नेहल क्रोध किया। घनश्याम ने कहा : 'बडेभैया अब आपको मेरे बारे में कभी कुछ भी सुनना नहीं पडेगा।' रामप्रतापजी को घनश्याम के इस मार्मिक वचन के अर्थ की कल्पना उस वक्त नहीं हुई, किंतु घनश्याम को गृहत्याग का बहाना मिल गया।

## निष्क्रमण

इस प्रसंग के पश्चात् वाकई दूसरे ही दिन वैराग्य एवं तपस्या को प्रिय माननेवाले घनश्याम ने संवत १८४८ के आषाढ शुकल दसमी ता २९-६-१७९२ शुक्रवार के दिन ब्राह्ममुहूर्त में किसी को ज्ञात किये बिना स्नान करने के बहाने निज अवतारी कार्य की सिद्धि के हेतु सदा के लिये गृहत्याग किया। यह दिन श्री स्वामिनारायण का निष्क्रमणदिन है।

## वनविचरण एवं भारत परिभ्रमण

अब घनश्याम नीलकंठ के नाम से पहचाने जाने लगे। निर्भय नीलकंठ ने ७ वर्ष, १ माह और ११ दिन हिमालय के घोर वन में तथा पूरे भारत के तीर्थों में पदयात्राकर विचरण किया। वन में गोपाल नामक योगी के पास किशोर नीलकंठ ने अष्टांग योग सिद्ध किया तथा हठयोग की सर्व कलाओं को सीख लिया। वनवास के दरमियान नीलकंठ ने अति कठिन

तपश्चर्याकर शरीर को सूखा डाला, इस हद तक कि शरीर में कहीं चोट लगे तो घाव से पानी की बूँद निकलती, किंतु रुधिर तो निकलता ही नहीं। एसी स्थिति में भी नीलकंठ सदैव स्वस्थ एवं तेजस्वी लगते थे।

वनविचरण और भारतपरिभ्रमण दरमियान प्रतापी नीलकंठ ज्ञानोपदेश कर हजारों साधुसन्यासीओं को सन्मार्ग पर लाए। उनके दिव्य प्रभाव मात्र से अनेक जनों को उनके पापकर्मो का त्याग करवाकर उन्हें दैवी बनाये। अनेक मुमुक्षु जीवों के जीवन परिवर्तित कर डाले। अवतारी पुरुष के लिये क्या अशक्य है?

मानव-संस्कृति का समग्र इतिहास दृष्टिगोचर करने से हमें प्रतीत होता है कि नीलकंठवर्णी के वनविचरण की समग्र घटना अद्‌भुत एवं अद्वितीय है। नीलकंठवर्णी अपने विचरण एवं परिभ्रमण को ज्यों-ज्यों आगे बढाते हैं त्यों-त्यों उनकी असाधारणता के दर्शन हमें होते हैं।

## दीक्षा

दीक्षा-प्रसंग भी नीलकंठवर्णी के अलौकिक प्रभाव के विषय में बहुत कुछ कह जाता है। विचरण करते-करते वर्णीवेश में नीलकंठ अंततः काठियावाड के मांगरोल बंदरगाह के पास लोज ग्राम में आ पहुँचे। वहाँ गाँव के बाहर स्थित 'लोज की बावड़ी' पर

आकर बैठे। उस समय स्वामी रामानंदजी के सुखानंद नामक एक शिष्य साधु बावड़ी पर नहाने आए। सुखानंद तेजस्वी नीलकंठवर्णी को देखते ही विस्मित हो, आनंद का अनुभव करने लगे। दोनों में वार्तालाप हुआ। सुखानंद ने नीलकंठ को कहाँ से आए, कहाँ जाना है, आपके मातापिता कौन आदि प्रश्न पूछें, नीलकंठ ने उत्तर दिया : 'मैं ब्रह्मपूर से आया हूँ तथा मुझे ब्रह्मपुर जाना है और जो वहाँ ले जाए वही मेरे सच्चे मातापिता।' इस अर्थगंभीर उत्तर में नीलकंठ स्वयं कौन हैं यह ज्ञात करा दिया। एसा उत्तर सुन सुखानंद दंग रह गए तथा स्वयं जिस ज्ञान प्राप्ति के लिए इतने साल गुरु के पास रह तनतोड महेनत की थी वह ज्ञान का भंडार इस नन्हें से ब्रह्मचारी में भरा देख, उनके प्रति सुखानंद को आदरभाव हुआ। तत्पश्चात् सुखानंद नीलकंठ को स्वामी मुक्तानंदजी के पास ले आए। नीलकंठ ने रामानंदजी के पट्टशिष्य मुक्तानंदजी के समक्ष अपनी प्रभुदर्शन की पिपासा व्यक्त की। मुक्तानंदजी तथा नीलकंठ उभय ने भिन्न-भिन्न पत्र स्वामी रामानंदजी पर लिखे। रामानंदस्वामी स्वयं का स्थान संभाल सके एसे प्रतिभावंत शिष्य की प्रतिक्षा कर रहे थे। वे अनेक बार कहते : 'मैं तो डुगडुगी बजानेवाला हूँ, पर वास्तविक खेल खेलनेवाला नट तो पीछे से आ रहा है।' अतः उन खतों में, नीलकंठ के प्रभुदर्शन की आतुरता एवं उसके लिए उनकी साधना को देख स्वामी रामानंदजी बीच सभा में बोल

उठे कि, 'जिसकी मैं प्रतिक्षा कर रहा था वह आ पहूँचा है।'

इस वचन के विषय में एक बार स्वामी निष्कुलानंदजी ने रामानंदस्वामी से पूछा : 'नए आनेवाले स्वामी रामदास जैसे हैं?' स्वामी ने कहा : 'रामदास तो क्या? उससे कहीं अधिक बडे!' निष्कुलानंद ने आगे पूछा : 'तो क्या मुक्तानंदस्वामी जैसे?' स्वामी बोले : 'उनसे भी अधिक बडे।' अंततः निष्कुलानंदजीने पूछा : 'आप जैसे?' स्वामीने कहा : 'हमारी भी उनके समक्ष क्या हैसियत? हमसे भी अधिक बडे।' अनल्प समय के पश्चात निष्कुलानंदस्वामी को जब इस बात की प्रतीति हुई तब वे ऐसा बोले : 'आज बात समझ में आई।'

रामानंदजी पर लिखे खत के उत्तर में स्वामी रामानंदजी ने नीलकंठ ब्रह्मचारी को लोज में रुकने को कहा तथा मुक्तानंदस्वामी की आज्ञा में रहकर साधुओं को हठयोग सिखाने को कहा, तदनुसार नीलकंठ मुक्तानंदस्वामी की आज्ञा में रहने लगे। वे गोबर एकत्रित करते; साधु के लिए भोजन तैयार करते; साधु की जगह को लीपते; बीमार साधु की सेवा करते। इस प्रकार सभी कार्य को संपन्न करते। उन्होंने किसी भी कार्य को तुच्छ नहीं माना। नीलकंठ के स्वरूप में विद्यमान सर्वोपरि महाप्रभु ने बताया कि, 'स्वयं को तीनों लोक में कुछ भी करना शेष नहीं है, उसी प्रकार जिसकी प्राप्ति न हुई हो उसे प्राप्त

करने की इच्छा भी नहीं तथापि स्वयं कर्म में प्रवृत्त रहेंगे; क्योंकि स्वयं जैसा आचरण करेंगे उसी प्रकार ही मनुष्य भी आचरण करेंगे।'

कुछ समय पश्चात् स्वामी रामानंदजी लोज के पास पिपलाणा गाँव में आ पहूँचे। नीलकंठवर्णी को वहाँ बुलवाया संवत १८५७ की कार्तिक शुकल पक्ष की एकादशी के दिन नीलकंठवर्णी को उन्होंने दीक्षा दी तथा 'सहजानंद' ऐसा नाम रखा। यह नाम सार्थक ही था; क्योंकि जो भी जन उनके संपर्क में आते उन सभी को वे सहज में ही आनंदित करते तथा नीलकंठवर्णी में नारायण के सभी गुण तथा ऐश्वर्य देख रामानंदस्वामी ने उनका 'नारायणमूनि' ऐसा नाम भी रखा। इस प्रकार समस्त सद्गुणों से पूर्ण सहजानंद को सं. १८५८ की कार्तिक माह की शुकल ११ प्रबोधिनी के दिन अपनी धर्मधूरा सौंप गुरुपद पर स्थापित किये। इस समय सहजानंदस्वामी की उम्र सिर्फ २१ वर्ष की थी।

तत्पश्चात् लगभग एक माह में स्वामी रामानंदजी विदेह हुए। श्री सहजानंदस्वामी की भावि अवतारी प्रवृत्ति की पूर्वभूमि ये समर्थ गुरु स्वामी रामानंदजीने तैयार की थी।

श्री स्वामिनारायण में विद्यमान भिन्न-भिन्न विशिष्ट गुणों के कारण सत्संग में उन्हें घनश्याम, नीलकंठवर्णी, सहजानंदस्वामी, नारायणमुनि, हरिकृष्ण, श्रीजीमहाराज, श्रीहरि आदि नामों से संबोधित करते।

दीक्षा दिन से श्री स्वामिनारायण के दिव्य जीवन का तृतीय तबक्का प्रारंभ होता है। इस काल दरमियान मनुष्य स्वरूप में छूपे हुए अवतारी प्रभु ने अपने प्रचंड प्रभाव, ऐश्वर्य तथा सामर्थी द्वारा अधर्म को उखाड, पृथ्वी पर सद्धर्म का स्थापन करने तथा विश्व में स्वयं के अवतारी स्वरूप की प्रतीति कराने के हेतु, मनुष्यशक्ति से असंभवित ऐसे अनेक विध विरल कार्य किये। जिसे स्थान संकोच के कारण हम संक्षिप्त में देखेंगे।

**सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में महान परिवर्तन तथा श्री स्वामिनारायण की अवतारी शक्ति के दर्शन**

### विचारधारा का शुद्धिकरण

रामानंदस्वामी के देहोत्सर्ग के पश्चात स्वामिनारायण ने निज अवतारी कार्य का प्रारंभ साधुओं की अलग-अलग मंडली (मंडल) बाँधकर किया। प्रत्येक मंडल को भिन्न-भिन्न प्रदेश में उपदेशार्थ भेजा; स्वयं भी एक मंडल लेकर घूमे। इस प्रकार स्वामिनारायण ने प्रथम अपने संतमंडल द्वारा भागवत धर्म का दिव्य संदेश घर-घर पहुँचाया तथा लोगों की विचारधारा शुद्ध बनाकर उनको आत्मोन्नति के मार्ग की ओर प्रेरित करने लगे।

### वहम तथा भ्रष्टाचार नाबूदी

उस काल में धर्म में प्रवेशित छल, कपट,

नीतिभ्रष्टता, जडता मिथ्याचार आदि को नाबूद करने के लिये *पंचनियम का सर्वत्र प्रचार किया। हजारों लोगों के पास पंचनियम का पालन कराकर उनको दोष रहित किये।

स्वयं की दिव्य प्रभा से तथा उपदेश देने की अद्‌भुत कला से उन्होंने लोगों को भूत-प्रेत, मंत्रजंत्र के वहम तथा मलिन देव-देवीओं की उपासना से मुक्त करवाया तथा एक भगवान का आश्रय लेने के पश्चात् किसीसे डरना नहीं ऐसा बोधकर उन्हें निर्भय बनाया।

## कुरीति एवं व्यसन से मुक्ति

हिंदु धर्म के किसी शास्त्र में सती होने का विधान नहीं है। यह रीति धर्म मूलक नहीं, अपितु कुरीति मूलक है। पति के साथ सती होनेवाली स्त्री का मोक्ष नहीं होता। विधवा स्त्री को तो सती होने के बजाय मन-कर्म-वचन से प्रभु को पति के रुप में मानकर हरिभक्ति करना चाहिए। ऐसा बोधकर, उन्होंने पति के साथ सती होने की अमानुषी रीति को बंध कराने के लिये लोगों को समझाया।

उस जमाने में काठीओं (एक जाति) में कन्या का जन्म होते ही दूध पीलाकर मारना अर्थात् उसकी बालहत्या करने का क्रुरतापूर्ण रिवाज था, कारण यह कि, बेटी के विवाह में उन लोगों को बहुत अधिक

---

* 'पंचनियम' की सर्वग्राही विस्तृत अभिज्ञता के लिए इस ग्रंथश्रेणी की पुस्तिका 'समस्त जीवन का योग' देखिए।

खर्च होता था। सहजानंदजी ने किसी के वश में न आ सके ऐसी लडायक तथा शूरवीर काठी जाति पर अपना अलौकिक प्रभाव डालकर उस दुष्ट तथा क्रुर कुरीति को रोका।

विवाह के प्रसंग में गानेवाले बीभस्त गीतों तथा अश्लील शब्दों के प्रयोगवाले गानों के प्रति सहजानंदजीने सख्त विरोध जगाकर उसे बंध करवाया। उसके स्थान पर, उस प्रसंग में, राधा-रुकिमणी विवाह जैसे प्रेरक गीतों की रचना अपने संत-कविओं के पास करवाकर उन्हें गाने का आदेश उन्होंने दिया।

निर्मल जीवन के लिए व्यसन मात्र वर्ज्य है यह कहकर उसका उन्होंने दारु, अफीम, गाँजा, तंबाकू आदि जीवन को पायमाल करनेवाले द्रव्यों के सेवन से मुक्त कर के निर्व्यसनी बनाया।

## अहिंसा का बोध

सहजानंदजी ने शास्त्रों के वचनों द्वारा अहिंसामय यज्ञ का प्रतिपादन किया। शास्त्र में 'अजेन यजेत।' ऐसा जो कहा है उसका अर्थ यह नहीं कि यज्ञ में बकरे की हिंसा की जाए। 'अज' अर्थात् पुराना धान, उसका यज्ञ में उपयोग करना यह सही अर्थ समजाकर यज्ञ में होती पशुहिंसा रोककर अहिंसक ब्रह्मयज्ञों का आरंभ करवाकर जीवों को आत्मा-परमात्मा का संबंध कराया।

धर्मकार्य में हिंसा हो ही नहीं सकती; इतना ही

नहीं परंतु समाज की हरेक प्रवृत्ति में हिंसा का आश्रय लेना यह अधर्म है ऐसा साबितकर सहजानंदजीने जगत को अहिंसा का सर्वोत्तम मार्ग दर्शाया।

उस समय के मुंबई के गवर्नर सर जॉन माल्कम के संग वार्तालापकर गौवधबंधी कराई तथा जानवरों की रक्षा की।

## शूद्र जातिओं का उद्धार

स्वामिनारायण ने मछुआरे, चरवाहे आदि कहलानेवाली पिछडी जातियों के मनुष्यों के साथ संपर्क कर उनके जीवन में रुचि लेकर उनकी क्रियाओं में ओतप्रोत होकर उनके जीवन को उन्नत किया; उसी प्रकार कणबी (एक जाति), बढई, मिस्त्री, दर्जी, मछुआरे, मोची, खोजा ईत्यादि निम्न स्तर के लोगों को समृद्ध तथा आचारशुद्ध बनाया; गणिका सदृश गलत राह पर जानेवाली स्त्री को भी सही राह पर लाकर उसका उद्धार किया। इस प्रकार स्वामिनारायण अधमोद्धारक के रूप में पहचाने जाने लगे।

## भेदभाव के गलत ख्यालों का त्याग

हिंदु धर्म में, हिंदु के अलावा अन्य जाति जैसे- पारसी, मुसलमान, खोजा, जैन, इसाई आदि को सम्मिलित करने में स्वामिनारायण का अनन्य योगदान है। 'आत्मा को जाति, वर्ण या आश्रम नहीं होता। भगवान के यहाँ एसा कोई भेद ही नहीं है। वहाँ तो

सब की एक ही जाति है। सत्वगुण में तथा सत्कर्मों में जो स्थिर हो उसकी जाति उँचे से उँची है,' ऐसा समझाकर कौमभेद, जातिभेद, रंगभेद तथा धर्मभेद के गलत विचारों को दूरकर उन्होंने भावात्मक एकता स्थापित कर लोगों में भाईचारे के भाव को बढाकर आत्मियता पैदा की।

## वर्णाश्रम की यथार्थ व्याख्या

स्वामिनारायण ने वर्णाश्रम धर्म की आवश्यकता को स्वीकार किया तथा उसकी यथार्थ व्याख्याकर, समाज से तिरस्कारवृत्ति के भावों को दूर किया। उन्होंने की हुई व्याख्या निम्नलिखित है।

(१) वर्णाश्रम धर्म सभी समय एक से नहीं रहते। देशकाल अनुसार बदलते रहते है; परंतु अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, क्षमा, दया आदि धर्म सनातन है।

(२) परमेश्वर के अवतार सिर्फ वर्णाश्रम के धर्मों की स्थापना के लिए नहीं होते, परंतु एकांतिक धर्म की स्थापना के लिए होते हैं।

(३) केवल वर्णाश्रम धर्म का पालन करने से मोक्ष नहीं होता; जो मनुष्य वर्ण तथा आश्रम के गर्व के साथ घूमता है उसमें साधुता आती ही नहीं।

स्वामिनारायण ने समाज में अस्पृश्य माने जानेवाले हरिजनों को सत्संगीओं में समान स्थान दिया। उन्हें अनुयायी बनाया। उनके प्रति स्वामिनारायण

का वर्तन, उस समय के महान सुधारकों के वर्तन से कई ज्यादा उदार एवं सहानुभूति पूर्ण था।

## सदाव्रत तथा अन्नसत्र

स्वामिनारायण ने परोपकारी कार्य तथा समाजजीवन की धारणा के लिए दान तथा पुण्य को आवश्यक माना। गरीबों के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त करते हुए स्वामिनारायण ने कहा : 'गरीब तो मुझे अधिक प्रिय हैं। जो उनकी क्षुधा को शांत करेगा वह मुझे प्रिय है।' उन्होंने गरीब तथा दरिद्र मनुष्यों की सेवा की महिमा, सार्वजनिक अन्नसत्रों को खोलकर बताई। जगह-जगह आरंभ किए हुए सदाव्रतों से भूखें तथा अर्धभूखें लोगों को राहत मिली। उन्होंने उनके साधुओं तथा अनुयायीओं द्वारा जहाँ जरूरी हो वहाँ कुँए, बावड़ी, तालाब आदि खुदवाए; इसके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न अनेक तरीकों से सहायताकर उनकी स्थिति को सुधारा। इससे लोग सदाचार तथा नीति के मार्ग पर चलने को प्रेरित हुए।

## स्त्रियों की उन्नति

स्वामिनारायण ने स्त्रीयों की उन्नति के लिए उस जमाने में नवीन लगे ऐसी अनेक प्रवृत्तियों का प्रारंभ किया। उन्हें अक्षरज्ञान दिलाने की व्यवस्था की। स्त्रियों को सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक तालिम देकर श्रेष्ठ विदुषीयाँ बनाई। उनके लिए अलग

संस्थाओं को स्थापित कर उनमें उपदेष्ठा के रूप में स्त्रियों की ही नियुक्ति की। वे स्वयं के तंत्र का स्वयं ही संचालन करें ऐसी व्यवस्था की; मोक्षमार्ग की साधना में स्त्रियों को समान अधिकार दिया। त्याग तथा दीक्षा विधि में भी स्वामिनारायण ने स्त्रियों को समान अधिकार दिया। विधवा स्त्रियों को सांख्यधर्म पालन करने का आदेश देकर प्रभुभक्ति में संलग्न किया।

## ब्रह्मचर्याश्रम का पुनःस्थापन

स्वामिनारायण ने ब्रह्मचर्य का असरकारक उपदेश देकर समाज से चारित्र की शिथिलता को दूर किया; तथा स्त्रीपुरुष के शील की रक्षाकर भारतीय संस्कृति का गौरव बढाया। अपने शिष्यों के चारित्रशील एवं संयमी जीवन द्वारा उन्होंने निरंकुश एवं स्वच्छंदी बने त्यागी साधुओं को सुधारा; अधःपतन को प्राप्त धर्मगुरुओं के लिए संयम का आदर्श स्थापित किया तथा लुप्त हुए ब्रह्मचर्याश्रम को पुनः स्थापित किया।

## लूटेरों का सुधार

शस्त्र के उपयोग से ही सभी प्रश्नों (समस्याओं) का हल होता है, ऐसी युग पुरानी मान्यता को स्वामिनारायण ने परिवर्तित कर दी। उन्होंने शस्त्र या पुलिस की सहायता के बिना उस समय की अंग्रेज सरकार भी जिसे वश में न कर सकी, ऐसे भयंकर

लूटेरों को अपने दिव्य प्रभाव तथा आदर्श चारित्र्य द्वारा वश किये; तलवार के स्थान पर माला पकडाकर भक्त बना दिये। स्वामिनारायण के इस प्रभाव की बात देशभर में तथा विदेश में भी प्रसर गई।

## संघर्ष-विवाद का त्याग

नारायण तथा शिवजी दोनों की वेद में एकात्मता प्रतिपादित की है, य बताकर उन्होंने शैव तथा वैष्णव के बीच चलते संघर्ष को मिटाया। उन्होंने ज्ञानमार्ग तथा कर्मयोग के मध्य समन्वय करके दोनों का आश्रय रखने को कहा। केवल धर्म या केवल ज्ञान या केवल वैराग्य ही आत्मस्वरूप की प्राप्ति में साधनभूत नहीं है, किंतु इन तीनों का यदि भक्ति के साथ समन्वय हो तो ही अहंममत्व के भाव टलते हैं तथा परमात्मा के स्वरूप का साक्षात्कार होता है, इस सत्य की यथार्थता को स्वयं के जीवन द्वारा दृष्टिकृत करवाकर उन्होंने ज्ञान के विवाद मात्र को टाल दिया।

## आलस्यप्रमाद रहितता

सहजानंदजीने अपने प्रवृत्तिशील जीवन तथा व्यवहार द्वारा समाज में नजर आते आलस्यप्रमाद को दूर किया। अवकाश के समय को आलस्य या व्यर्थ की प्रवृत्ति में व्यतीत न कर हरिभक्ति तंथा मानवकल्याण के कार्य करने में व्यतीत करने के हेतु लोगों को प्रेरित किया।

## मानवकल्याण के हेतु मंदिरों की रचना

समस्त मानवपरिवार की परमशांति के लिए स्वामिनारायण ने सुंदर सुविधावाले, यम-नियम-संयमयुक्त साधुपरमहंसो से शोभित, भजन कीर्तनों से गुँजते तथा परब्रह्म परमात्मा के दिव्य प्रकाश प्रसारित करनेवाले मंदिरों की रचना की। उन्होंने कहा : 'मन तथा इंद्रियों का जहाँ आरोहण हो तथा परमात्मा के दिव्य स्वरूप में स्थिर हो सके वह स्थान ही वस्तुतः मंदिर।'

## उत्सव-धार्मिक उत्सव का आयोजन

मनुष्यों को जीवन में सात्विक आनंद तथा उत्साह प्राप्त हो तथा साथ में धर्म, ज्ञान तथा भक्ति के उच्च संस्कार प्राप्त हो इसलिए उत्सव तथा धार्मिक उत्सव एवं संमेलनों का स्वामिनारायण ने सुंदर आयोजन किया। ऐसे धार्मिक उत्सव जगह-जगह होते थे। वहाँ ज्ञानवार्ता होती। जिसके परिणाम स्वरूप संघबल तथा भ्रातृभाव भी व्यापक हुआ।

## ललित कलाओं को उत्तेजन

प्रेमानंदस्वामी ने सहजानंदस्वामी को 'समस्त कलाओं की खदान' कहा है। इस प्रकार स्थापत्य की कला, वस्त्र एवं अलंकार की कला, तरह-तरह के भोजन की कला, चित्र तथा मंडप रचने की कला,

संगीतकला, लेखनकला इत्यादि कलाओं को उन्होंने बहुत ही प्रोत्साहित किया था। शिल्पकला की दृष्टि से निर्मित सुंदर मंदिर; सहजानंदस्वामी के जीवन चरित्र के हूबहू भाव प्रस्तुत करते प्रासंगिक चित्र, मूर्तियाँ; महान संतकविओं की साहित्यकृतियाँ; शिष्योंने स्वयं बनाकर भेंट के स्वरूप में अर्पण की हुई कारीगिरीवाली वस्तुएँ, वस्त्र, अलंकार, पादूकाएँ, माला, बर्तन, लकडी के बने बैठने के आसन, पर्यंक, गाडियाँ; अन्नकूटोत्सव के समय तैयार किये हुए विविध प्रकार के भोज्य पदार्थ आदि उस समय की विविध कला-कारीगिरी की स्थिति का सुंदर रूप प्रस्तुत करता है।

## पवित्र शास्त्रों की भेंट

श्री स्वामिनारायण ने उत्तम आचारसंहिता 'शिक्षापत्री' की रचनाकर मनुष्य को आचारशुद्धि, धर्मशुद्धि एवं व्यवहारशुद्धि का जतन करते किये। परमात्मा की परावाणी 'वचनामृत' ग्रंथ देकर मनुष्यों को विचारमय तथा उच्च आध्यात्मिक जीवन जीने को प्रेरित किये। इस प्रकार देह तथा जीव दोनों का श्रेष्ठ कल्याण हो एसे दो पवित्र शास्त्रों की उन्होंने मनुष्यकूल को भेंट दी।

## धर्मधुरा की सुपुर्दगी

श्री स्वामिनारायण ने समग्र विश्व का आत्यंतिक कल्याण सदाकाल सिद्ध होता रहे ऐसी सर्वांग संपूर्ण

संस्था का स्थापन किया। इस संस्था में त्रुटि न आ सके ऐसी संरचना रची। धर्म एवं व्यवहार दोनों को अनुकूल हो ऐसे सुंदर नियम बनायें। उनकी स्थापित उज्जवल धर्म की धूरा संभाल सके ऐसे समर्थ विद्वान एवं चारित्र्यवान आचार्यों को कारोबार की देखभाल एवं धर्म प्रचार की जिम्मेदारी सौंपी। उन्होंने ऐसा आदेश दिया कि वे स्वयं सभी व्यवहार अग्रगण्य त्यागी एवं गृहस्थों की सलाह लेकर करें, किंतु स्वतंत्रता पूर्वक न करें।

इस प्रकार उन्नचास वर्ष की छोटी उम्र में स्वामिनारायण ने स्वयं के इच्छित सर्व कार्य पूर्ण किए।

## श्री स्वामिनारायण की व्यक्तिविशेषता

(१) आज पर्यंत हुए सभी महापुरुषों के जीवन से श्रेष्ठ, गतिशील एवं चरित्रसंपन्न दिव्य जीवन स्वामिनारायण का दृष्टिगोचर होता है। वे एकांतिक धर्म के प्रचारार्थ अविरत पैदल या घोडे पर २८ वर्ष तक भ्रमण करते रहे। इस दरमियान उन्होंने हजारों ग्राम तथा शहरों की मुलाकात ली तथा बडी तादाद में मनुष्यों को सदुपदेश देकर प्रभुपरायण बना दिये।

(२) कोई भी मनुष्य चाहे वो हिंदु, पारसी, मुसलमान, खोजा, अंग्रेज, वेद न माननेवाले, जैन हो या कोई भी धर्म का हो वह श्री स्वामिनारायण की दिव्य प्रभा से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा।

(३) अनेक लोगों के कल्याण एवं शिक्षण के हेतु वे स्वयं ही साधक, साधन एवं साध्य बने। उनका समस्त जीवन ही जीता जागता धर्मशास्त्र और अध्यात्मशास्त्र बन चुका था।

(४) गहन से गहन तत्त्वदर्शन को वे लोकभाषा में प्रस्तुत कर सकते थे। सामान्य से सामान्य मनुष्य समझ सके ऐसा विवेचन सहजानंदस्वामी कर सकते थे। सीधी, सरल, मिताक्षरी ग्राम्यभाषा एवं वार्तालाप की प्रवचनशैली उनके वश थी।

(५) जनसमूह की जिन अशुद्धियों को वे निकालना चाहते थे उनमें वे हमेंशा रचनात्मक वर्तन दिखाते।

(६) उनका सिद्धांत था कि बूराई का बदला भलाई से देना। स्वयं का बूरा करनेवाले पर भी दया करने को तत्पर रहते थे। उनके जीवन में कीसी भी व्यक्ति को उन्होंने श्राप दिया हो या किसीका बूरा चाहा हो ऐसा नहीं हुआ। उनके अनुयायीओं से कदाचित कोई अपराध हो जाए, तो स्वयं जाकर उसके लिए क्षमायाचना करते।

(७) बालकों के प्रति उन्हें अपार प्रेम एवं अनुकंपा थी। वे स्वयं के नित्य कार्य से अवश्य ही समय निकालकर बच्चों को बोध देते। बालक का दिल दुभने पर वे स्वयं दुःखी होते। बालक के पास भी बालभाव से माफी माँगने में वे लघुता का अनुभव नहीं करते।

(८) सद. प्रेमानंदस्वामी ने उन्हें 'करुणालोचन'

कहकर गाया है कि :

'कोई ने दुःखियो रे, देखी न खमाय,
दया आणी रे, अति आकला थाय।
अन्न, धन वस्त्र रे, आपीने दुःख टाले,
करुणादृष्टि रे, देखी वान ज वाले।'

अर्थ : (किसी का दुःख देख सह नहीं सकते थे। दया के कारण अति व्याकुल हो जाते। अन्न, धन, वस्त्र आदि देकर दुःख का निवारण करते। करुणा दृष्टि से देखकर विशुद्ध करते थे।)

(९) स्वामिनारायण ने एक प्रसंग में स्वयं के प्रकट होने के उदेश्य को प्रदर्शित करते हुए कहा : 'मैं विसंवाद जगाने नहीं, परंतु संवाद जगाने आया हूँ।'

(१०) स्वामिनारायण में स्वयं के प्रभाव द्वारा सामनेवाले को आकर्षित करने की यौगिक शक्ति थी तथा उच्चकोटी के आध्यात्मिक जीवन द्वारा लोगों को हमेंशा प्रेरणाबल देने की अजब शक्ति थी। यही उनका बड्डपन तथा प्रभुता थी।

(११) जिस-जिस ने स्वामिनारायण को देखा उनका एक अनुभव निश्चित था कि :

(१) उनकी आँखों में अद्‌भुत जादू था वैसा ही उनकी वाणी तथा चाल में जादू था।

(२) उनके नेत्रों से प्रेम की अमृत धारा बहती हो ऐसा प्रतीत होता था।

(३) उनके तेजस्वी स्वरूप से आकर्षित होकर सभी नतमस्तक हो जाते थे। आज भी उनकी काष्ठ-

पाषाण की प्रतिमाओं में उनका चित्ताकर्षण झलकता है। उनके वरद् हस्त मुद्रा से अभय प्राप्ति की भावना अनुभूतित होती है।

(१२) स्वामिनारायण के दाहिने चरण में नौ तथा वाम चरण में सात ऐसे कुल सोलह विलक्षण चिन्ह थे।

## स्वामिनारायण धर्म की विशिष्टताएँ

(१) इस धर्म के अनुयायी वर्ग में अनेक वर्ण, वर्ग तथा धर्म के लोग समाविष्ट हुए हैं। कोई भी व्यक्ति जात-पात या अन्य किसी प्रकार के भेदभाव बिना इस धर्म में प्रवेश कर सकते हैं। उन सभी मनुष्यों को समदृष्टि से अपनाया जाता है।

(२) इस धर्म में प्रवेश करनेवालों को 'दारु, मांस, चोरी, व्यभिचार तथा दुषित न होना तथा न करना' ये पाँच नियम आंतर-बाह्य शुद्धि के लिए स्वीकारना अनिवार्य है।

(३) स्वामिनारायण ने धार्मिक इमारत की नींव सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य तथा साकार परब्रह्म की उपासना के चार सिद्धांतों पर रची है।

(४) स्वामिनारायण ने परमात्मा के स्वरूप का यथार्थ निर्णय सांख्य, योग, वेदांत तथा पंचरात्र इन चार शास्त्रों का समन्वयकर किया है।

(५) इस धर्म में प्रचलित वादों में से, द्वैतवाद से ज्ञान तथा महिमा युक्त भक्ति; अद्वैतवाद से

साधनचतुष्टय तथा जीवन मुक्ति; शुद्धाद्वैत से सेवारीति तथा विशिष्टद्वैत से शरीर-शरीरी संबंधसिद्धांत तथा शरणागति उनके योग्य स्वरूप में ग्रहण किये गये हैं।

(६) प्राचीनकाल से हमारे यहाँ जो सर्व धार्मिक तथा नैतिक सर्वोच्च परंपराए चली आई हैं वे सभी इस धर्म में उनके शुद्धतम स्वरूप में दृष्टिगोचर होती हैं। इतना ही नहीं, परंतु विश्व के तमाम धर्मो के उत्तम तत्त्वों का इसमें समावेश किया गया है।

(७) यह धर्म केवल आध्यात्मिक मुद्दे तक सीमित नहीं; अपितु भौतिक को भी सम्मिलित करनेवाला शुद्ध व्यवहार धर्म है तथा यह केवल सुखी, शिक्षित तथा उच्च वर्ण तक मर्यादित नहीं है, परंतु निम्नांत तक के बहुजन समाज को स्पर्शनेवाला व्यापक धर्म है।

(८) यह धर्म त्याग, ज्ञान तथा तपश्चर्या से उज्ज्वलित हो उठता है; उसके साधु तथा हरिभक्त सदाचार शुद्धि का एक अलग ही प्रभाव डालते हैं। उनमें विशुद्ध वातावरण, ब्रह्मचर्य का निर्विकारी भाव, सेवा, सदाव्रत तथा संयम के आदर्श एवं ज्ञान, वैराग्य एवं प्रेमभक्ति की शीतलता की अनुभूति होती है। उनमें जो कोई विधिविधान, आचार एवं तत्त्वबोध विद्यमान हैं वे संपूर्ण सत्य एवं मुक्ति देनेवाले हैं।

(९) इस धर्म का प्रसार देशभर में तथा विदेश में बहुत ही बढा है एवं बढ रहा है, जो उसकी सर्वदेशीयता

को दर्शित करता है।

(१०) यह एसा मार्ग है जो हजारों वर्ष बाद भी तत्कालीन देशकाल के अनुकूल रहेगा।

इस प्रकार श्री स्वामिनारायण ने सर्वग्राही, सर्वोच्च एवं कल्याणकारी विश्वधर्म की स्थापना करने में अप्रतिम व्यवहारिक बुद्धि एवं समन्वयात्मक दृष्टि दिखाई है। यही स्वामिनारायण की वास्तविक महानता है।

## देशविदेश के समर्थ तत्त्वचिंतक एवं महापुरुष की दृष्टि से श्री स्वामिनारायण एवं स्वामिनारायण धर्म

**(१) भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने कहा था कि :**

'हिंदुस्तान में अनेक धर्म हैं, किंतु स्वामिनारायण धर्म प्रशंसनीय, शुद्ध एवं आकर्षक है। मुझे इस धर्म के प्रति अति आदर है।'

**(२) सरदार वल्लभभाई पटेल, भारत के भूतपूर्व-गृहमंत्रीने टिप्रणी की है कि :**

'स्वामी श्री सहजानंदजी एवं श्री स्वामिनारायण धर्म के साधुओं के पवित्र जीवन से महागुजरात में सहकार की सौरभ प्रसरी थी। अनेक सामान्य मनुष्यों के तथा पिछडी जाति के बिनशिक्षित मनुष्यों के जीवन को पशुकोटी से उपर लाकर उन्हें संस्कारी बनाने में इस धर्म का योगदान महत्त्वपूर्ण है।'

***(३) आचार्य श्री आनंदशंकर ध्रुव कहते हैं कि:***

*'स्वामी श्री सहजानंद के उपदेश से गुजरात, काठियावाड की अनेक क्रुर एवं लडायक जाति कोमल तथा शांत हुई है तथा प्रभु की ओर मुडी है। 'वचनामृत' नामक उनके उपदेशवचनों का जो संग्रह है, वह बहुत ही गंभीर, मनन करने योग्य तथा ज्ञान एवं उपासना के निरुपण से भरपूर है।'*

***(४) गुजरात के जानेमाने साहित्यकार कनैयालाल मुनशी बताते हैं कि :***

*'गुजरात के महान ज्योतिर्धरों में स्वामी श्री सहजानंदजी का स्थान अग्रस्थान में रहा है।'*

***(५) न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानडे ने टिप्पणी की है कि :***

*'स्वामी श्री सहजानंद मध्यकालीन हिंदु धर्म के आखरी सुधारक थे।'*

***(६) श्री गुलजारीलाल नंदा, भारत के भूतपूर्व गृहमंत्री अपने स्वानुभव की टिप्पणी करते हुए कहते हैं :***

*'स्वामिनारायण द्वारा प्रदातित अहिंसा का सिद्धांत जगत के सर्व अहिंसा के सिद्धांतो में मुझे श्रेष्ठ लगा है। उनके इस असाधारण सिद्धांत ने मुझे इतना प्रभावित किया है कि मेरा स्वयं का उसमें रुपांतर हो गया है।'*

***(७) गुजराती भाषा के विवेचक श्री विजयराय***

***कल्याणराय वैद लिखते हैं कि :***

*'महागुजरात में तीस वर्ष के धर्मचक्रप्रवर्तनरूप से सार्थक होता हुआ स्वामिनारायण का अवतारकार्य जगतइतिहास में विरल है; गुजरातइतिहास में अद्वितीय एवं विप्लवकारी है।'*

***(८) मनु सूबेदार प्रमुख, सस्ता साहित्य वर्धक कार्यालय, कहता है कि :***

*'स्वामी सहजानंद ने एक विकट घडी में आकर प्रजाजीवन में अदभूत क्रांति प्रकट की है। बिलकुल निम्न स्तर तक उन्होंने सत्य एवं सदाचार का अमृत सिंचन किया है। किसी व्यक्ति-विशेष के हाथों ही यह हो सकता है। स्वामी सहजानंद एक महान सुधारक हैं, धर्मचक्र के प्रवर्तक हैं तथा उज्ज्वल राष्ट्रविधान के पयगंबर हैं।'*

***(९) श्री महेंदीनवाझ जंग, भूतपूर्व गवर्नरश्री, गुजरात राज्य, लिखते हैं कि :***

*'स्वामिनारायण के उपदेश पानी के बहते प्रवाह की सदृश स्वच्छ एवं निर्मल तथा सभी को उपयोगी हों वैसे हैं। मनुष्य कोई भी ज्ञाति या धर्म का हो, किंतु उसे सत्य का दर्शन कराने के लिए प्रकाश की आवश्यकता होती है, जो ऐसा दिव्य प्रकाश देता है वह भगवान या पयगंबर होता है।'*

***(१०) समर्थ चिंतक श्री किशोरलाल मशरुवाला ने श्री स्वामिनारायण के अवतारी कार्य का मूल्यांकन करते हुए लिखा है :***

'जिस समय कच्छ, गुजरात तथा काठियावाड में अंधकार छा रहा था, उस समय श्री सहजानंदस्वामी ने लगभग ३० वर्ष तक अविरत परिश्रम लेकर लोगों को शुद्ध मार्ग पर पथदर्शित किया; अपने प्रताप से अनेकों के हृदय को प्रकाशित किया। उँच, नीच, हिंदु, अहिंदु सभी जाति को अपना संदेश पहुँचाने के लिए उन्होंने जो योजक बुद्धि खर्च की, जोखिम उठाए तथा साधक तैयार किए वे बुद्धदेव की स्मृति कराते हैं। स्वयं के काल में प्रसिद्ध पुरुषों में सहजानंद स्वामी सबसे महान थे। उस काल के मुमुक्षुओं को पुरुषोत्तम के रूप में उपासना करने योग्य थे। अगर अवतार पृथ्वी पर होते हैं तो उन्हें अवतार की संज्ञा बेशक दी जा सकती है।'

**(११) महाकवि न्हानालाल बताते हैं कि :**

'श्रीजी ने प्रवर्तित धर्ममार्ग की लाक्षणिकता का आकलन कैसे हो? वह धर्ममार्ग है आचारस्वच्छता का, विधिस्वच्छता का, उपासनास्वच्छता का, व्यवहारस्वच्छता का तथा सर्वदेशीय आंतरबाह्य स्वच्छता का। भंग, गाँजा, तंबाकु आदि त्याग कराकर श्रीजी ने गृहस्थों के जीवन को निर्मादक बनाया, रंगे हुए कमंडल तोड श्रीजी ने संतो को निर्मोही बनाया, स्त्री-पुरुषों के लिए अलग-अलग दर्शन व्यवस्था स्थापितकर श्रीजीने देव मंदिरों को पवित्र बनाये, पंच नियम धारण करवाकर अनुयायीओं को आचारशुद्ध किया, शिक्षापत्री देकर व्यवहारशुद्ध किया, वचनामृत

सुनाकर ज्ञानशुद्ध किंया, पर्वोत्सव-धार्मिक उत्सव मनाकर जनता में उत्साह छलकाया, भव्य मंदिरों, अहिंसात्मक यज्ञों, विशुद्ध पूजाविधान, पालना-हिंडोला, वसंतपंचमी, जन्माष्टमी आदि वैष्णवी महोत्सव, जलझीलनी (एकादशी) तथा रामनवमी के समारंभों कंा आयोजनकर जनता को जागरुक किया। परिव्राजक की सदृश गाँव-गाँव जाकर जनता को उमंगी बनाया, भावरूप हिंडोले में झूलकर प्रजा को उत्साह पान करवाया, संसार को सजीवन किया। स्वामिनारायण ने क्या किया यह इतिहास प्रश्न का उत्तर एक ही सूत्र में पूछें तो यही है कि श्रीजीमहाराज ने गुजरात को सरयू नीर से धोकर ब्रह्मआर्द किया, नवयुग के प्रभात के स्वामिनारायण प्रभातसूर्य थे।'

## अब विदेशी महानुभाव श्री स्वामिनारायण के अवतारी कार्य का मूल्यांकन करते हुए क्या कहते हैं वह देखें

### (१) मि. हेन्री ज्योर्ज बर्जेस का स्वानुभव :

'सहजानंदस्वामी कल्याणकारी कर्मवीर थे। उन्होंने किसी भी सत्तावान या श्रीमंत की सहायता लिये बिना ही हजारों लोगों को गलत राह से मोडकर सही राह दिखाई। सहजानंदजी, राजा से लेकर रंक तथा विद्वानों से लेकर अशिक्षित लोग, सभी में एक समान पूजनीय थे। उनकी नम्रता विरोधियों के हृदय के जहर को भी निचोड लेती थी।'

**(२) मि. बाउल्स लिखते हैं कि :**

'इस धर्म में जो साधु बनते हैं उन्हें आदेश दिया गया है कि चाहे कितना ही दमन या संत्रास दिया जाए तो भी बचाव किये बिना उसे सहन करना तथा संत्रास देनेवाले के प्रति मन में जरा भी रोष न रखना। वाकई इस धर्म की यह लाक्षणिकता है। उनके उपदेश की असर से नीति का स्तर बहुत उँचा उठा है।'

**(३) कलेक्टर विलियम्स स्वयं का अनुभव इस प्रकार लिखते हैं :**

'शास्त्रों में जिस स्तर की नीतिमत्ता का वर्णन किया है उसके मुकाबले सहजानंद की नीतिमत्ता बहुत उँचे स्तर की जान पडती है। वे उच्च प्रकार की पवित्रता तथा शुद्धि का उपदेश देते हैं। उन्होंने अपने शिष्यों को राह चलती स्त्रियों के प्रति दृष्टिपात भी न करने का आदेश दिया है। वे एकेश्वर का उपदेश देते हैं। जिन गाँव तथा प्रदेश ने सहजानंद का सत्कार किया है वे सब एक समय के सबसे खराब एवं खतरनाक गिने जाते थे। आज उनकी सबसे अच्छे एवं सलामत विस्तारों में गणना होती है।'

**(४) प्रिन्स होपकिन्स, प्रोफे., लंडन युनिवर्सिटी, स्वयं का स्वानुभव कहते हैं :**

'स्वामिनारायण में स्वयंभू शक्ति विद्यमान थी। स्वयं अवतारी पुरुष होते हुए भी कभी प्रतिष्ठित बनकर नहीं विचरे। स्वयं का जीवन कठोर संन्यासी के

धर्मानुसार व्यतीत करते हुए भी उनमें प्रसन्नता, आनंद एवं विनोद की फूहारें बहती रहती थी। स्वयं गाते; स्वयं कुस्ती, मजाक मस्ती भी करते थे। ऐसे अद्‌भुत व्यक्ति उनके देहविलय के पश्चात् भी लुप्त नहीं हुए तथा अनेकों को अंतिम समय दर्शन देते रहे हैं।'

इस प्रकार देशविदेश के गहन अभ्यासी एवं आदरणीय महापुरुषों ने श्री स्वामिनारायण का तथा उनके द्वारा स्थापित धर्म का जो ऐतिहासिक मूल्यांकन किया है उस पर से प्रतीत होता है कि स्वामिनारायण वाकई अवतारी पुरुष थे।

## स्वामिनारायण में दृष्टिकृत होते परमेश्वर के कल्याणकारी गुण

स्वामिनारायण का भगीरथ अवतारी कार्य उनमें विद्यमान इन गुणों को आभारी है। सभी को अपना जीवन उन्नत बनाने के हेतु उपयोगी हों इस उदेश्य से उन गुणों की यादी यहाँ प्रस्तुत की है।

ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, शौच, सत्य बोलना, क्षमा, दया, सरलता, त्याग, संतोष, मनकी निश्चलता, समता, तितिक्षा (सहनशीलता), तप, सौंदर्य, कोमलता, क्रिया निपुणता, करुणा, धैर्य, स्थिरता, गंभीरता, सदाचार, निर्मानीता, मन-कर्म-वचन से अहिंसापालन, अस्तेय, षट् उर्मियों रहितता (भूख, प्यास, शोक, मोह, जरा एवं मृत्यु पर विजय), परोपकारी, अपरिग्रह, रमणीय भोग में अरुचि, कुसंग का परित्याग, साधुता,

सेवा आदि गुण स्वामिनारायण में सहज ही दृष्टिगोचर होते थे। उनके अनेक उदाहरण हैं, जिनमें से कुछेक पर दृष्टिपात करें :

(१) ग्राम सारंगपुर में एक समय तीन दिन तक वृष्टि हुई। गाँव में कई घर गिर गए। उनमें से एक ब्राह्मण का घर भी गिरा। उसके दस-बीस पशु दब गए। श्रीहरि ने यह देखा और तत्काल ही स्वयं दौडकर गए तथा छप्पर के आधाररूप बल्ले को उठाकर पकड रखा तथा पशु को बाहर निकाला। तदोपरांत गाँव में अनेक गरीब जनों के घरों के पुनःनिर्माण में सहायता कराई। इस प्रकार श्रीहरि दुःखी एवं दरिद्रों की सेवा के लिए बिना बुलाए ही दौड पडते।

(२) स्वामिनारायण वर्णीवेष में वैंकटाद्रि से जगन्नाथपुरी एवं रामेश्वर की ओर जा रहे थे। राह में 'सेवकराम' नामक एक साधु जो अतिसार के दर्द से पीडित था, वह उन्हें मिला। दुर्गंध एवं मल से साधु का शरीर स्पर्श न हो सके ऐसा हो गया था। पीडा के कारण कराह रहा था। स्वामिनारायण ने यह देखा उनसे यह देख, सहा न गया। वे सेवकराम की सेवा करने रुक गए। वे सेवकराम को नहलाते, उसके कपडे साफ करते तथा भोजन पकाकर उसे खिलाते। स्वयं गाँव में जाकर भोजनकर आते। किसी दिन बस्ती में अन्न न मिलने पर उन्हें उपवास करना पडता; यह जानते हुए भी किसी दिन सेवकराम ने

उन्हें ऐसा नहीं कहा कि 'मेरे पास द्रव्य है, सो हम दोनों के लिए भोजन तैयार करें तथा आप भी हमारे साथ भोजन करें;' स्वामिनारायण ने निःस्वार्थभाव से सेवाचाकरी कर सेवकराम को स्वस्थ किया कैसी निःस्वार्थ सेवावृत्ति।

(३) लोजपुर में महाराज (श्री स्वामिनारायण) सदाव्रत चलाते थे। उस सदाव्रत में जो कोई भिक्षुजन आता उसे भोजन कराने स्वयं लंगोट बाँधकर तथा कंधो पर काँवर उठाकर भिक्षा माँगते जाते; और सुबह शाम रोटी बनाकर, वे सबको भोजन कराते। तत्पश्चात् अपने सभी साधुओं को भोजन कराकर अंत में स्वयं भोजन करते।

(४) सहजानंदस्वामी के गुरु रामानंदस्वामी ने स्वयं की अंतिम बेला में सहजानंदस्वामी को दो वरदान माँगने का आग्रह किया। तब सहजानंदस्वामी ने दो वरदान इस प्रकार माँगे :

(१) 'आपके भक्त का बिच्छु के डंख का दुःख भले ही मुझे रोम-रोम में करोड गुना हो, किंतु उस भक्त को न हो।'

(२) 'आपके भक्त की तकदीर में रामपात्र (भीख माँगना) हो तो वह मुझे मिले, परंतु वह भक्त अन्नवस्त्र से सुखी रहे।'

पहेले वरदान में स्वामिनारायण की भक्तवत्सलता तथा करुणा के दर्शन होते हैं। दूसरे वरदान में तो उन्होंने भक्त का प्रारब्ध स्वयं पर ले लिया है। आज

दिन तक किसी अवतार ने भक्त के दुःखों तथा प्रारब्ध का स्वयं भार वहन करेंगे ऐसा नहीं कहा है। आज भी उस वरदान के अनुरूप स्वामिनारायण धर्म के साधु-हरिभक्त प्रभुआज्ञा का पालनकर सुख-शांति से जीवन व्यतीत करते हैं। यह ऐतिहासिक हकीकत जैसी-तैसी नहीं है।

(५) सिद्धपुर के एक ब्राह्मण ने श्रीहरि के पास आकर कहा, 'हे महाराज! मेरे बेटे को यज्ञोपवित देना है तथा घर में कुछ नहीं है, अतः मुझे कुछ दिजिए।' श्रीहरि ने घोडे से उतरकर उस ब्राह्मण से कहा कि, 'तुम इस घोडें को ले जाओ, उसे बेचकर उससे प्राप्त रूपयों से बेटे का यज्ञोपवित करना।' मेथाण के पूंजाजी ने ब्राह्मण को रूपया देकर घोडा वापस ले लिया। ऐसे दयालू स्वभाव के श्रीहरि ने अनेक दुःखित लोगों को सहायताकर उनके दुःख का निवारण किया है।

(६) एक बार श्रीहरि रात्रि के समय अकेले लींमली गाँव के सघराम वाघरी के झोंपडे में पधारें। सघराम तथा उसकी पत्नी आश्चर्यचकित हो गए कि इस वक्त महाराज यहाँ कैसे! महाराज सघराम की फटी गुदडीवाले खटिये पर सारी रात बैठकर उसके परिवांर को बोधकर उसे खुश किया। इस प्रकार पिछडे वर्ग के मनुष्यों के प्रति श्रीहरि में बहुत प्रेम तथा भावना थी।

(७) जेतलपुर में यज्ञ किया उस समय श्रीहरि

ने प्रत्येक घर में डेढ मन गेहूँ पीसने के लिये दिये। एक वैश्या ने भी याचना की। महाराज ने कहा : 'अगर तुम अपने भूतकाल की भूलों का निवारणकर पश्चाताप करने तैयार हो तथा तुम स्वयं गेहूँ पीस लाओगी तो तुम्हारा कल्याण करेंगे।' उस स्त्री ने श्रीहरि के वचन को शिरोमान्य रखा तथा वह स्वयं गेहूँ पीस लाई। तत्पश्चात अपना धंधा छोड, सन्मार्ग पर चल, भक्त बन गई। श्रीहरि में दूसरों के अपराध क्षमाकर कल्याण करने की अपार उदारता थी।

(८) एक बार सहजानंदस्वामी घूमते-घूमते लांघणज गाँव में आए। इस गाँव में सोनबाई भावसार तथा नागर ब्राह्मण गंगामां नामक दो सत्संगी स्त्रियाँ रहती थी। सोनबाई गरीब थी तथा गंगामां धनसंपत्ति से सुखी थी। गंगामां ने सोनबाई से कहा, 'तुम साधुओं के लिए भोजन तैयार करना तथा मैं महाराज के लिए ऊँचे से ऊँचा चावल पकाकर भोजन तैयार करुँगी।' सोनबाई को अपनी गरीबी के कारण सहजानंदजी महाराज को भोजन कराने का अपना भाग्य हाथों से निकल रहा हो ऐसा लगा, परंतु भगवान को गरीब-अमीर का फर्क नहीं होता। सहजानंदजी सीधे उस गरीब स्त्री के घर गए तथा उसने साधु के लिए तैयार किए हुए भोजन से भोजन किया। पश्चात् गंगामां थाल लेकर जब आई तब स्वयं के लिए तैयार भोजन सोनबाई को खिलाने की आज्ञा उन्होंने की।

(९) १८६९ में बहुत ही भयंकर 'अगणोतेरो' (उन्हत्तरा) अकाल पडा तब स्वामिनारायण ने लोगों को अन्नवस्त्र की सहायता करने अपने त्यागी-गृही शिष्यों को भिन्न-भिन्न दुष्कालग्रस्त ईलाकों में भेजा; तथा उनको आदेश दिया कि भूखों को अन्नदान देने में सत्संगी बिन-सत्संगी का भेद नहीं करना। वे स्वयं भी जगह-जगह गए तथा अनेकों को अपने ऐश्वर्य से सहायता कर उगारा। जीवसेवा तथा मानवसेवा यह प्रभुसेवा का एक प्रकार है, यह स्वयं ने आचरण द्वारा बताया।

## सहजानंदस्वामी का अलौकिक प्रभाव तथा ऐश्वर्यदर्शन

भगवान का पृथ्वी पर जब प्राकट्य होता है, तब अपने दिव्य स्वरूप के प्रति जीवों को आकर्षित करने की तथा उनके जीवन को परिवर्तित करने की उनमें शक्ति होती है। स्वामिनारायण में ऐसी शक्ति तथा सामर्थ्य सहज ही प्रतीत होता था। निम्नलिखित घटनाएँ उस शक्ति के उदाहरण के रूप में बताई हैं।

(१) सहजानंदस्वामी की अलौकिक कांति, प्रखर प्रतिभा, ज्ञान की गंभीरता तथा सद्‌गुणों का स्वामित्व दृष्टिकृत कर असंख्य लोगों ने स्वयं को उनके चरणारविंद में अर्पण किया। बडे-बडे महंत, मौलवी, साधु, वैरागी, सन्यासी, शक्ति के उपासक, अनेक मतपंथी तथा श्रीमंत गृहस्थाश्रमी, सत्ताधारी तथा भयंकर

लूटेरें भी अपनी-अपनी अपूर्णता को पहचानकर इस पूर्णस्वरूप की शरण में आए।

(२) स्वामिनारायण ने हजारों मनुष्यों के जीवन में मूलभूतरूप से जीवन परिवर्तनकर उनमें नव चैतन्य का प्रागट्य किया था। उनके उपदेश से अनेकों को शांति एवं समाधान हुआ था। उनके प्रताप से कई भक्त समाधिनिष्ठ, कई निरावरण दृष्टिवाले, कई त्रिकालज्ञ, कई सत्यसंकल्प, कई मूर्तिमान वैराग्य जैसे, कई परमेश्वर में अखंड वृत्ति रखनेवाले; तो दूसरे अनेक रजोगुण, तमोगुण के मलिन भाव व्याप्त न हों ऐसे हुए थे। मांगरोल के गोरधनभाई जैसे कई मूर्ति के साथ तदात्मकभाव को प्राप्तकर चूके थे।

(३) वैरागीओं की ओर से साधुओं को होते त्रास के दुःख को टालने के हेतु, साधुओं को परमहंस की दिक्षा देना आवश्यक लगा। इसलिए स्वामिनारायण ने कालवाणी गाँव में एक रात्रि पांचसौं त्यागी साधुओं को एक साथ परमहंस के स्वरूप की दीक्षा दे दी। कंठी उपवीत तथा शिखा का त्याग कराया, मूर्ति की प्रत्यक्ष पूजा के स्थानपर मानसी पूजा की विधि सिखाई। स्वामिनारायण के अलौकिक प्रभाव के कारण इन भागवती दीक्षाधारी संतो को कंठी, उपवीत तथा पूजा का त्यागकर, नई दीक्षा लेने में विलंब नहीं हुआ। यहाँ टिप्पणी आवश्यक है कि श्री स्वामिनारायण के एक वचन मात्र से इन परमहंसो में से कई लग्नमंडप

से मींढल (लग्न की विधि में बाँधा जानेवाला विशिष्ट सूखा फल) तोडकर आए हुए युवान थे; कई अपनी खडी फसल छोडकर आए किसान थे; कई श्रीमंत गृहस्थ थे; कई गाँव-जागीर छोडकर आए राजदरबारी थे। दूसरे अनेक स्वामिनारायण के खत को पढकर पानी पीने भी न रुकते हुए, त्यागी होने चल पडे थे।

(४) सहजानंदस्वामी ने शैवों, शाक्तों, मुसलमानों, जैनों आदि को दृष्टिमात्र से समाधि कराकर सभी को उनके इष्टदेव के दर्शन कराए तथा स्वयं के स्वरूप में लीनकर बताये।

(५) अगतराई में पर्वतभाई नामक भक्त को तथा नागकडा में व्यापकानंदस्वामी को स्वयं के दिव्य स्वरूप में से चौबीस अवतारों को प्रकट होते हुए दिखाये तथा पुनः दिव्य स्वरूप में लीन हो गए ऐसे दर्शन कराए।

(६) लोगों को सन्मार्ग पर मोडकर परमात्मा के स्वरूप में जोडने के लिए स्वामिनारायण ने समाधि प्रकरण चलाया था, जिसके कुछ उदाहरण देखें :

श्रीजी को देख अनेक मनुष्य, चिडियाँ, कबूतर, कपि आदि प्राणीओं को भी समाधि हो जाती।

श्रीजी की पादूका के आवाज को सूनने मात्र से अनेक जन को समाधि होती थी।

अष्टांगयोग जिन्होंने सिद्ध नहीं किया था ऐसे साधुओं को स्वयं की छडी देकर वे सूचन करते कि छडी के एक सीरे (छोर) को स्पर्श कराने पर

समाधि होगी तथा दूसरे सीरे को स्पर्श से समाधि का निवारण होगा।

समाधि से पुनः वास्तविक स्थिति में आने के पश्चात् वे समाधि में स्वयं को हुए दिव्य अनुभवों की बात करते। उसे सुनकर अन्य लोगों को अंतर में शांति एवं सुख का अनुभव होता था।

(७) सहजानंदस्वामी ने खुद मुक्तानंदस्वामी को एक वृक्ष तले रामानंदस्वामी के प्रत्यक्ष दर्शन कराए; तथा उनसे कहलवाया कि समाधिप्रकरण में ढोंग या पाखंड नहीं है। इससे मुक्तानंदस्वामी का समाधिप्रकरण के प्रति संशय निवारण हुआ तथा सहजानंदस्वामी को अपनी श्रद्धा तथा भक्ति अर्पण की। उनके प्रति स्वयं के मन में प्रकट हुई दोषबुद्धि के लिए सहजानंदस्वामी की क्षमा मांगी।

(८) मांडवी में निज प्रताप द्वारा सब के समक्ष आत्मानंदस्वामी के पास कुरान के कलमा पढवाए थे।

(९) अहमदाबाद में सूबेदार विट्ठलराव बाबा के यहाँ एक अनपढ भाट के बेटे के पास तथा उमरेठ में हरिभट्ट नामक अबोध, गूंगे ब्राह्मण के पास वेद मंत्रो का पाठ कराया था।

(१०) स्वामिनारायण अपने भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने एक ही समय पर भिन्न-भिन्न स्थानों में दर्शन देते। घोडो के घुडसाल में भयंकर लूटेरे जोबनपगी को, जिस-जिस घोडे के पास वह जाता वहाँ महाराज के दर्शन होते थे। स्वामिनारायण किसी घोडे को

घास डालते तो किसी को पानी पीलाते हों, यह प्रताप देख, जोबनपगी तथा उसके आदमी श्रीहरि के आश्रित हुए तथा चोरी डकैती का धंधा छोडकर सच्चे भक्त बन गए।

(११) धार्मिक उत्सव का प्रसंग हो, यज्ञ का प्रसंग हो या किसी भक्त के घर उत्सव हो, उस समय अगर भोजन की कमी हो इतनी बडी संख्या में खानेवाले भक्त आए हों, तो भोजन की कमी नहीं होने देते थे। ऐसे चमत्कार स्वामिनारायण बताते थे।

(१२) सहजानंदस्वामी के संकल्प से असाध्य रोग मिट जाते थे। उन्होंने भक्त दादाखाचर की बेटी को भयंकर बीमारी में, संतो की तथा स्वयं की प्रसादी का अन्न खिलाकर ठीक किया। लींमली के मूलजी शेठ की आखों के नंबर संकल्प मात्र से दूर किए थे; मूलजी शेठ जीवित रहे तब तक बिना चश्मे के भली प्रकार देख पाते थे।

(१३) संवत १८६९ की साल में अकाल पडनेवाला है, इसकी भविष्यवाणी स्वामिनारायण ने पहले ही कर दी थी। गाँव-गाँव के सत्संगीओं को पत्र लिखवाये थे कि : 'अनाज तथा चारेपानी का संग्रह करना। उसे खरीदने के पैसे न हों तो कोई भी मिलकत बेचकर भी संग्रह करना।' भविष्यवाणी के अनुसार वाकई अकाल पडा। जिन्होंने उनके वचन में विश्वास रखकर दानेपानी का संग्रह किया था, वे मुसिबत में नहीं पडे।

(१४) एक समय श्री गढपूर में श्रीजीमहाराज

रात में अक्षर ओरडी में शुकमुनि के पास पत्र लिखवा रहे थे। तब अचानक दिया बूझ गया। अतः शुकमुनि ने कहा, 'पत्र अधूरा रेंहा और दिया बूझ गया।' तुरंत ही श्रीजीमहाराज ने स्वयं के चरणारविंद के अंगूठे से दिये से भी अधिक प्रकाश दिखाया। पत्र पूर्ण नहीं हुआ तब तक वह प्रकाश विद्यमान रहा था।

(१५) स्वामिनारायण अपनी महत् कृपा की दृष्टि से अपने भक्त के गुण, कर्म, स्वभाव बदल डालते; इतना ही नहीं उनके तथा उनके महान संतो के भगवत संबंध को प्राप्त किए हुए वृक्षों के स्वभाव-गुणों में भी परिवर्तन कर डालते। एसे कई वृक्ष आज भी मौजूद हैं।

(१६) सहजानंदस्वामी को लाखों लोगों ने उनके जीवनकाल दरमियान ही अवतारी परब्रह्म पुरुषोत्तम के रूप में अपनायें थे। उन्होंने उनके वचनों को त्वरित ग्रहण किया तथा उनके हाथों में अपने नाडी-प्राण सौंप दिये थे।

(१७) जिन संतो-परमहंसों को लोग भगवान के अवतार के रूप में स्वीकारते हों वे संत-परमहंस जिनकी इष्टदेव के रूप में उपासना करते हों, ऐसे श्री स्वामिनारायण सर्व अवतार के अवतारी हों इसमें क्या आश्चर्य?

(१८) भगवान के अवतारों ने जैसा सामर्थ्य बताया था वैसा सामर्थ्य तो श्री स्वामिनारायण के भक्त दर्शाते थे, अर्थात् श्री स्वामिनारायण का सामर्थ्य

तो अवतारों के सामर्थ्य से कहीं बढकर था।

उपरोक्त हकीकत दर्शाती हैं कि स्वामिनारायण किसी को अपने प्रभाव से प्रभावित करने नहीं, परंतु अपने भक्तों को सहायरूप होने के हेतु तथा केवल कल्याण के हेतु से अपने पूर्ण पुरुषोत्तम स्वरूप की मनुष्यों को प्रतीति कराने, स्वयं का दिव्य सामर्थ्य दर्शित करते थे तथा चमत्कारी लगे ऐसे कार्य करते थे।

भगवान श्री स्वामिनारायण की सर्वोपरिता प्रतिपादन करते शास्त्रों के आधार वचन :

## श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रादुर्भाव के बारे में शास्त्रों में उल्लेख

**ब्रह्मांडपुराण में वचन है कि -**

दत्तात्रेयः कृते युगे त्रेतायां रघुनंदनः।
द्वापरे वासुदेवः स्यात् कलौ स्वामी वृषात्मजः।।

'सत्ययुग में दत्तात्रेय, त्रेतायुग में रघुनंदन, द्वापरयुग में वासुदेव तथा कलिकाल में धर्म के पुत्र स्वामिनारायण प्रकट होंगे।'

**पद्मपुराण में कहा है कि -**

पाखण्डबहुले लोके स्वामिनाम्ना हरिःस्वयम्।
पापपंकनिमग्नं तज्जगदुद्धारयिष्यति।।

'पाखंड से भरपूर इस लोक में 'स्वामी' नामक श्रीहरि स्वयं परमात्मा के रूप में प्रकट होकर पापरूपी पंक में धसे इस जगत का उद्धार करेंगे।'

***महाभारत में दर्शाया गया अवतार-अवतारी का भेद -***

*महाभारत के शांतिपर्व के मोक्षधर्मानुशासन पर्व अ.३८३ में नरनारायण भगवान नारदजी को पूछते हैं:*

अपीदानीं स भगवान् परमात्मा सनातनः।
श्वेतद्वीपे त्वया दृष्टः आवयोः प्रकृतिः परा।।

*'हे नारद, इस समय आपने श्वेतद्वीप में जाकर, नरनारायण, हम दोनों के कारणरूप, सनातन परमात्मा, वासुदेव भगवान के कैसे दर्शन किए?'*

*इस प्रकार पूछे जाने पर नारदजी नरनारायण भगवान को कहने लगे :*

दृष्टो मे पुरुषः श्रीमान् विश्वरूपधरोऽव्ययः
दृष्टौ युवां मया तत्र तस्य देवस्य पार्श्वतः।।

*'हे भगवान! मैने विश्वासरूपधारी ऐसे कांतिमान परम पुरुष अर्थात् वासुदेव भगवान के दर्शन किये; इतना ही नहीं, परंतु आप दोनों को उस स्थान में भगवान के करीब देखा।'*

***भीष्मपितामह युधिष्ठिर राजा को कहते हैं -***

कृते युगे महाराज! पुरा स्वायम्भुवेऽन्तरे।
नरो नारायणश्चैव हरिः कृष्णः स्वयम्भुवः।।

*'हे महाराज! पूर्व स्वायंभुव मन्वंतर के सत्ययुग में उस स्वायंभू भगवान 'वासुदेव' के चार अवतार हुए थे। उनके नाम नर, नारायण, हरि तथा कृष्ण रखे थे।'*

***श्रीमद् भागवत में अवतार-अवतारी का भेद -***

*प्रथम स्कंध के तीसरे अध्याय में ऐसा कहा है कि 'भगवान ने महदादिक तत्त्व द्वारा वैराज पुरुष का रूप धारण किया तथा वैराज पुरुष द्वारा चौबीस अवतार हुए हैं।' दशम स्कंध पूर्वार्ध अ.४१ में सुदामा बलदेवजी तथा श्रीकृष्ण से कहते हैं कि :*

भवन्तौ किल विश्वस्य जगतः कारणं परम्।
अवतीर्णाविहांशेन क्षेमाय च भवाय च।।

*'आप श्रीकृष्ण तथा बलदेव दोनों सर्व जगत के कारण हो तथा सर्व विश्व के सुख के लिए तथा वृद्धि के हेतु इस लोक में वासुदेव के अंशरूप से अवतरित हुए हो; अर्थात् आप वासुदेव के अवतार हो।'*

***विष्णुपुराण के पंचम अंश के १७वे अध्याय में-***

*अक्रुरजी श्रीकृष्ण के तथा बलदेवजी के दूर से दर्शन कर कहते हैं :*

भगवद्वासुदेवांशौ द्विधा योऽयं व्यवस्थितः ।।

*'ये श्रीकृष्ण तथा बलदेवजी दो रूप हैं, जिनमें श्रीकृष्ण हैं वे भगवान वासुदेव के अंशावतार हैं।'*

***हरिलीलाकल्पतरु स्कंध ३ अ.२० में श्रीहरि मूलजित को कहते हैं -***

नैक्यं हि विद्यते धीमन्नवतारावतारिणो।
वर्तते वास्तवो भेदस्ताराचन्द्रमसोरिवः।।

*'अवतार-अवतारी में एकता नहीं है, परंतु सितारों एवं चंद्रमा में जैसा भेद है वैसा भेद अवतार-अवतारी में है।'*

***हरिवाक्यसुधासिंधु तरंग १४६ में श्रीहरि ने कहा है कि -***

रामकृष्णादयः सर्वेऽवताराः सन्त्यो हि मे।
पुरुषोत्तमस्य वित्तेरयेतत्सत्यं ब्रवीमि वः।।

*'पुरुषोत्तम ऐसा मैं, आपको यह सत्य बात कहता हूँ कि रामकृष्णादि सभी अवतार मेरे हैं, ऐसा समझें।'*

यस्मिन् सर्वाणि तेजांसि विलीयन्ते स्वतेजसे।
तं वदन्ति परे साक्षात् परिपूर्णतमः स्वयम्।।

*'जो सर्व अवतारों को स्वयं के स्वरूप में लीन करते हैं, तथा पुनः कार्य के लिए प्रकट करते हैं, वे परिपूर्ण एवं स्वयं साक्षात् परब्रह्म परमात्मा हैं।'*

***टिप्पणी :*** *आगे हमने देखा कि भगवान श्री स्वामिनारायण ने तमाम अवतारों को स्वयं की मूर्ति से प्रकट किये थे तथा पुनः स्वयं के स्वरूप में लीन किये थे। समाधि द्वारा अनेक लोगों को उन्होंने यह दिव्य ऐश्वर्य दृष्टिकृत करवाया था। यही श्री स्वामिनारायण महाप्रभु की सर्वोपरिता है।*

***हरिलीलाकल्पतरु स्कंध २ अ.१ में धर्मदेव तथा भक्तिमाता को वायुपुत्र हनुमानजी कहते हैं -***

युष्मत्पुत्राद् बिभेत्यस्मात्सर्वलोकभयंकरः।
कालस्तयेश्वराः सर्वे सन्त्पस्यादेशवर्तिनः।।
हेतुरेवावताराणामवतारी स्वराट् प्रभुः।
एषाऽक्षराक्षरपरः कारणानांच कारणम्।।

*'सर्व लोक को भय देनेवाला काल भी आपके*

पुत्र से भयभीत होता है; एवं ईश्वर भी आपके पुत्र श्रीहरि की आज्ञा में रहते हैं। आपके यह पुत्र सर्व अवतारों के भी अवतारी स्वराट् प्रभु हैं। क्षर-अक्षर से पर एवं सर्व के कारण के भी कारण हैं।'

**स्वामिनारायण भगवान की श्रीमुखवाणी 'वचनामृत' क्या कहते हैं, जाँचते हैं -**

**गढडा अं. प्र. वच. ३८ -**

'सर्वोपरी जो पुरुषोत्तम भगवान वे ही दयाकर जीवों के कल्याण हेतु इस पृथ्वी पर प्रकट होकर सभी लोगों के नयनगोचर वर्तित होते हैं तथा आपके ईष्टदेव हैं एवं आपकी सेवा को अंगीकार करते हैं; ऐसे यह प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान वे अक्षरादिक सर्व के नियंता हैं तथा ईश्वर के भी ईश्वर हैं एवं सर्वोपरिरूप से बरतते हैं। सर्व अवतार के अवतारी है, एवं आप सभी को एकांतिक भाव द्वारा उपासना करने योग्य हैं एवं इस भगवान के पूर्व जो अनेक अवतार हुए हैं, वे भी नमस्कार करने योग्य हैं एवं पूजने योग्य हैं।'

**लोया वच. ११ -**

जैसी भगवान की मूर्ति स्वयं को प्राप्त हुई हो उसी का ध्यान करना चाहिए, पूर्व भगवान के अवतार हो गए उन मूर्ति का ध्यान नहीं करना चाहिए एवं स्वयं को जो भगवान की मूर्ति प्राप्त हुई हो उसके प्रति प्रतिव्रता का प्रण रखना चाहिए।

**गढडा म. प्र. वच. १३ -**

'वे अक्षरातीत जो भगवान हैं वे ही सर्व अवतार

के कारण हैं, सभी अवतार पुरुषोत्तम से ही प्रकट होते हैं तथा पुनः पुरुषोत्तम में लीन होते हैं। उस तेज में जो मूर्ति है वही यह प्रत्यक्ष महाराज हैं ऐसा समझें उससे तुम्हारा परम कल्याण होगा। इस बात को प्रतिदिन नवीन रखना, परंतु लापरवाही करके भुला मत देना। इस भगवान के स्वरूप की दृढता के बिना तो चाहे कितना ही त्याग रखो, या चाहे कितने ही उपवास करो, किंतु कल्याण के मार्ग की कमी दूर नहीं होगी।'

**गढडा म. प्र. वच. ९ -**

'स्वयं को प्राप्त हुआ जो साक्षात् भगवान का स्वरूप, उसे सदा दिव्य साकार मूर्ति एवं सर्व अवतार का कारण अवतारी, ऐसा समझे तथा ऐसा न समझकर निराकार समझे तथा दूसरे अवतार जैसे समझे, तो उसका द्रोह किया कहलाता है। ज्ञानमार्ग तो ऐसा समझना चाहिए की किसी भी प्रकार से भगवान के स्वरूप का द्रोह हो ही नहीं। भगवान की मूर्ति का बल अधिकाधिक रखना चाहिए, जो सर्वोपरी भगवान का स्वरूप है वही मुझे प्राप्त हुआ है।'

**गढडा म. प्र. वच. १८**

'अपने इष्टदेव के जन्म से लेकर देहत्याग पर्यंत के चरित्र के शास्त्र, उससे संप्रदाय की पुष्टि होती है। अतः अपने इष्टदेव के चरित्र के शास्त्र को पढना एवं सुनना चाहिए।'

**पंचाला वच. १ -**

'जिस प्रकार भगवान का संबंध अधिक हो

ऐसा उपाय करे, उसे बुद्धिमान कहेंगे। पशु के सुख से मनुष्य में अधिक सुख है, उससे राजा का सुख अधिक है, उससे देवता का सुख अधिक है, उससे इन्द्र का सुख अधिक है, उससे बृहस्पति का अधिक, उससे ब्रह्मा का, उससे वैकुंठ के लोक का, उससे गोलोक का सुख अधिक है तथा उससे भी भगवान के अक्षरधाम का सुख अति अधिक है।'

**अहमदाबाद वच. ७ -**

इस वचनामृत में श्रीजीमहाराज बताते हैं कि, 'सभी ब्रह्मांडों की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय का कर्ता भी मैं ही हूँ तथा मेरे तेज से अनंत ब्रह्मांड के असंख्य शिव, असंख्य ब्रह्मा, असंख्य कैलास, असंख्य वैकुंठ तथा गोलोक, ब्रह्मपुर तथा असंख्य करोडों दूसरी भूमिका वे सभी प्रकाशित हैं और फिर मैं कैसा हूँ? तो मेरे पैर के अंगूठे से पृथ्वी को डिगाउँ तो असंख्य ब्रह्मांड की पृथ्वी डिगने लगती है तथा मेरे तेज से सूर्य, चंद्र, सितारें आदिक तेजोमय हैं। ऐसा मैं मुझमें यह समझकर निश्चय करे तो मैं भगवान, मुझमें मन स्थिर हो तथा किसी काल में व्यभिचारी न हो तथा जो जीव मेरी शरण में आए हैं तथा आएँगे तथा एसा समझेंगे उन सभी को मैं सर्वोपरि ऐसा मेरा धाम है उसकी प्राप्ति कराऊँगा।'

इस प्रकार श्री स्वामिनारायण ने स्वयं ही स्पष्टरूप से घोषित किया है कि 'स्वयं अवतारों के भी अवतारी हैं; अवतार का कारण भी स्वयं ही हैं।'

*समकालीन महान संत-परमहंसो के स्वानुभव क्या कहते हैं यह देखें -*

*हरिलीलाकल्पतरु : रामानंदस्वामी का अनुभव -*

*रामानंदस्वामी लालजी भक्त को इस प्रकार कहने लगे :*

स इत्यथाऽवदद् भक्तं मतः कृष्णो यथाऽधिकः।
तथाऽत्यधिक एवेशात् तस्मद्दपि स विद्यते।।

*'हे भक्त! जैसे श्रीकृष्ण भगवान मुझसे बडे हैं, वैसे लोज में आए हैं वे नीलकंठ ब्रह्मचारी, गोलोकधामनिवासी, श्रीकृष्ण भगवान से भी अधिक बडे हैं।'*

*पुनः स्वामी आगे कहते हैं :*

सर्वेषामवताराणां कारणं च परात्परः।
सोऽपाकृतगुणैश्वर्यो विद्यते पुरुषोत्तमः।।

*'हे भक्त! वे ब्रह्मचारी तो दिव्य गुण ऐश्वर्यवाले सर्व अवतारों के कारण हैं तथा परात्पर पुरुषोत्तम परमात्मा हैं।'*

**सद्गुरु गोपालानंदस्वामी की बातें**

**वार्ता १६७ -**

*एक हरिभक्त ने स्वरूपानंदस्वामी से पूछा : 'यह श्रीजीमहाराज का अवतार कैसा समझना चाहिए?' तब स्वरूपानंदस्वामी ने कहा, 'यह अवतार नहीं, यह तो रामकृष्णादिक सभी अवतार के अवतारी प्रगट पुरुषोत्तम हैं; तथा अन्य अवतार जैसी कला तो स्वयं के भक्त द्वारा बताई है।'*

**वार्ता १६८ -**

*एक समय एक साधु ने कहा : 'मुझे तो सारा ब्रह्मांड दिखता है।' तब व्यापकानंदस्वामी बोले : 'आपको तो एक ब्रह्मांड दिखता है और मुझे तो अनंत आश्चर्य, अनंतकोटि ब्रह्मांड तथा गोलोकादि धाम हस्तामलवत् दृष्टिकृत हैं। यह तो रामकृष्णादि सभी अवतार के अवतारी श्री सहजानंद पुरुषोत्तम की मूर्ति के ध्यान का प्रताप है।'*

***श्री सहजानंदस्वामी के प्रश्न का साधुओं द्वारा दिया हुआ सुंदर उत्तर -***

*स्वयं सहजानंदस्वामी ने एक समय साधुओं से प्रश्न किया : 'हमने अन्य अवतारों सदृश पराक्रम नहीं किये, समुद्र पर बाँध नहीं बनाया, दस मस्तक का रावण नहीं मारा, मंदराचल को पीठ पर नहीं धरा, कंस, शिशुपाल का वध भी नहीं किया। तथापि आप हमें क्यों परमेश्वर कहते हो?'*

*साधुओं ने उत्तर दिया : 'राम ने रावण को मारा, किंतु वह रावण तो काम एवं अभिमान से पराजित ही था। वामन ने बलि को छला, किंतु वह तो लोभ मोह से छला हुआ ही था। कृष्ण ने कंस, शिशुपाल का वध किया, किंतु मानादिक षड्रिपुओं ने उनका वध कर ही दिया था; उस काम, क्रोध लोभ, मोह आदि हमारे अंतःशत्रुओं को आपने मारा।* ***अतएव हम आपको अवतारी कहते हैं।*** *आपने समुद्र पर बाँध नहीं बाँधा, किंतु आपने भवसागर तथा प्रभु के धाम के*

बीच सीधी राह बना दी है। आपने मंदराचल या गोवर्धन पर्वत धारण नहीं किया, किंतु हमारे पापपर्वतों को क्षण में हटाकर हमारे चित्त को शुद्धकर दिया है। **अतः हम आपको प्रकट पुरुषोत्तम कहते हैं।'**

**हरिस्मृतिचिंतामणी में सद्‌गुरु निष्कुलानंदजीने गाया है कि -**

'अलौकिक मूर्ति आजनी, धरी धर्मकुमार;
जोतां ना' वे जोड्यमां, आ सम अन्य अवतार।
समर्थ मूर्ति सुखभरी, धरी न धरशे कोई;
सर्वोपरी छे श्रीहरि, सहजानंद प्रभु सोय।'

(अर्थ : आज अलौकिक मूर्ति धारण किए धर्मकुमार अन्य सभी अवतारों में अतुल्य हैं। ऐसी समर्थ सुखभरी मूर्ति न किसी ने धारण की है न कोई धारण कर सकेगा। श्रीहरि सहजानंद प्रभु सर्वोपरी हैं।)

## भगवान श्री स्वामिनारायण ने दिये हुए दो अभयवचन

(१) 'जो जीव हमारे आश्रय में आएगा तथा धर्मनियम में रहेगा उसे हम अंतःकाल में दर्शन देकर भगवान के अक्षरधाम की प्राप्ति करायेंगे।'

इस वचन के अनुसार आज भी श्री स्वामिनारायण महाप्रभु अंतः समय में स्वयं के आश्रितों को दर्शन देकर स्वयं के दिव्य धाम की प्राप्ति कराते हैं। इस प्रकार स्वामिनारायण ने स्वयं के वास्तविक

आश्रितों को मृत्यु के भय से मुक्त किया है।

(२) मंदिरों में भगवान की मूर्ति को प्रस्थापित कर उसमें स्वयं के सत्यसंकल्पत्व का सिंचन किया, प्राणप्रतिष्ठा की। तत्पश्चात् प्रभु बोले : 'यह मूर्ति में मैं सदा प्रत्यक्ष रहूँगा। आपलोगों की सच्ची भक्ति से की हूई पूजा ग्रहण करुँगा तथा आपलोगों के शुभ संकल्प सत्य करुँगा।' पुनः आगे कहा : 'हमारी इस दिव्य मूर्ति में तथा प्रतिमाओं में काष्ठ, पाषाण या कागज का भाव प्रतिपादित न करें।'

आज दिन तक भगवान के किसी अवतार ने ऐसी वाणी का उच्चारण किया हो एसा नहीं जान पडता। सर्वोपरी प्रकट प्रभु के सिवा ऐसा वचन देने का सामर्थ्य किसमें हो सकता है?

## भगवान श्री स्वामिनारायण ने प्रदान किया हुआ सर्वोपरि मंत्र

समस्त ब्रह्मांडों के नियामक सिर्फ एक पुरुषोत्तम नारायण अर्थात् स्वयं ही हैं, ऐसा ज्ञात करवाकर 'स्वामिनारायण' मंत्र दिया तत्पश्चात् बोले कि : 'सभी क्रिया में मेरी स्मृति रखो; माला मेरे नाम की फेरो; भजन कीर्तन मेरा करो; चरित्र मेरे गाओ; ध्यान मेरे स्वरूप का धरो; सेवा-उपासना मेरी करो। मैं तुम्हें सभी दोषों से मुक्तकर मेरे सर्वोपरि दिव्य सुख की प्राप्ति कराऊँगा।' सर्वोपरि परमात्मा ही ऐसी कृपावाणी का उच्चारण कर सकते हैं।

**भगवान श्री स्वामिनारायण तथा उन्होंने स्थापित किए धर्म के विषय में उपरोक्त समग्र अध्ययन द्वारा निम्नलिखित हकीकत स्पष्ट होती है**

(१) श्री स्वामिनारायण सर्वावतारी, क्षर-अक्षर से पर एवं सर्व कारण के कारण परब्रह्म परमात्मा हैं।

(२) श्री स्वामिनारायण स्वयं परात्पर परमात्मा होने के कारण सर्वोत्कृष्ट शांति-सुख की प्राप्ति हेतु, जगत के सर्व मनुष्य द्वारा उपासना करने योग्य हैं।

(३) अवतारों में अंश, कला, पूर्ण, परिपूर्ण जैसी तारतम्यता है, परंतु अवतार में अवतारी का आविर्भाव होता है; अतएव स्वाभाविक तौर से अवतार द्वारा आचरित चरित्र अवतारी के ही हैं। इस दृष्टि से शास्त्र में अवतार-अवतारी की अभेदता के वचन भी दृष्टिकृत होते हैं।

(४) जगत समक्ष आज व्यक्ति एवं समाज उभय का सर्वश्रेष्ठ श्रेय एवं प्रेय हो ऐसा सरल, परंतु पूर्ण मार्ग श्री स्वामिनारायणने प्रबोधित किया है।

(५) श्री स्वामिनारायण धर्म सर्वग्राही, सर्वजीवहितावह एवं विशाल सर्वदेशीय होने के कारण विश्वधर्म है ऐसा हर किसी को लगे बिना नहीं रहेगा।

(६) धर्म की व्याख्या विशाल दृष्टिबिंदु से होनी चाहिए। जो धर्म मनुष्य को वास्तविकरूप से मनुष्य बनाता है वही विश्वधर्म है। यह कथन प्रस्तुत धर्म के संदर्भ में अक्षरशः सत्य प्रमाणित होता है।

इस प्रकार, सर्वहितकर इस धर्म की विश्व में उत्तरोत्तर वृद्धि एवं विकास होता रहे ऐसी सर्वोपरि परात्पर परमात्मा श्री स्वामिनारायण महाप्रभु को प्रार्थना सह समाप्ति करता हूँ।

## भगवान के स्वरूप में वृत्ति रखने का अभ्यास करें

मृदंग, सारंगी, सरोद, ताल इत्यादि साज बजाकर कीर्तनगान करना उसमें अगर भगवद्स्मृति न रहे तो वह गान न करने तुल्य है। भगवान की विस्मृति कर जगत में कई जीव गाते हैं तथा साज बजाते हैं, किंतु उसके द्वारा मन की शांति नहीं होती। अतएव भगवद् कीर्तनगान, नामरटन, नारायणधून इत्यादि जो करें भगवान की मूर्ति का स्मरण कर ही करें। भजन करते समय भगवान में वृत्ति रखें एवं भजन से उठने के उपरांत अन्य क्रिया करते समय अगर भगवान में वृत्ति न रखे तो उसकी वृत्ति भजन के समय भी भगवद्स्वरूप में स्थिर नहीं होती। अतः चलते-फिरते, खाते-पीते सर्व क्रिया में भगवान के स्वरूप में वृत्ति रखने का अभ्यास करे तो भजन में बैठते समय भगवान में वृत्ति स्थिर रहे। जिसकी वृत्ति भगवान में रहने लगे उसे तो कार्य करते समय भी रहती है। उसके हेतु सावधान होकर भगवान के स्वरूप में वृत्ति रखने का अभ्यास, भगवान के भक्त को करना चाहिए।

**- भगवान श्री स्वामिनारायण**

# श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन क्यों ?

श्री स्वामिनारायण भगवान के सर्वजीवहितावह संदेश अनुसार मानव जाति के श्रेय एवं प्रेय के लिये-

(क) सेवा - सदाव्रत के आदर्शानुसार विना भेदभाव के आर्थिक मुसीवत का अनुभव करते भाईवहनों को आवश्यक सहायता पहुँचाना;

(ख) आरोग्य प्रसार की मार्गदर्शक व्यवस्था तथा रोगोपचार के परिचर्या केन्द्र-औषधालय की स्थापना-चलाना, अथवा ऐसा कार्य करती संस्था को सहायता करना;

(ग) आत्मिक शांति तथा मानवता को प्रसारित करते मंदिर, सत्पुरूष के स्मारक केन्द्र आदि का निर्माण-निर्वाह-विकास करना;

(घ) जीवन रचना में उपयोगी साहित्य एवं कला के विकास कार्य को प्रोत्साहित करना;

(च) सम्यक् अभ्यास के लिये पुस्तकालय, संग्रहालय, संशोधन केन्द्र की स्थापना - चलाना अगर ऐसे ईकाई को सहायता देना;

(छ) सर्व समन्वय स्थापित हो ऐसे सांसारिक एवं तत्त्वज्ञानविषयक प्रकाशन प्रसिद्ध करना तथा उनके द्वारा जनसमुदाय का ऊर्ध्वगामी विकास में सहायक होना;

एवं इस प्रकार :

(१) सामाजिक जीवन के आधार तुल्य सदाचार तथा नीति की कक्षा बलवान हो ऐसी प्रवृत्ति का आयोजन करना;

(२) समाज में ऐक्य एकता तथा आपसी सहृद्भाव वृद्धित हो, विश्वबंधुत्व की भावना का विकास हो एवं विसंवादिता दूर हो ऐसे कार्यक्रम देना;

(३) विश्व के धर्म तथा पक्षो के बीच संवादिता का जतन हो इसके लिये सर्वधर्मीय परिषद का आयोजन करते हुए आध्यात्मिक एवं सामाजिक उत्कर्ष को गति देना;

ऐसे सुआयोजित कार्यक्रम तथा प्रवृत्ति द्वारा परिपूर्ण भगवत्स्वरूप की प्राप्ति की ओर मानव समुदाय सर्वांगी विकास का प्राप्ति कर गतिमान हो, ऐसा मिशन का शुभ आशय है।

प्रभु जैसा तथा उतना ही चैतन्य निर्मल हो तब ही
प्रभु का साक्षात्कार होता है एवं प्रभु रुप हो सकते है.

- पूज्यश्री नारायणभाई